साहित्य

जयदेव

सुनीति कुमार चटर्जी

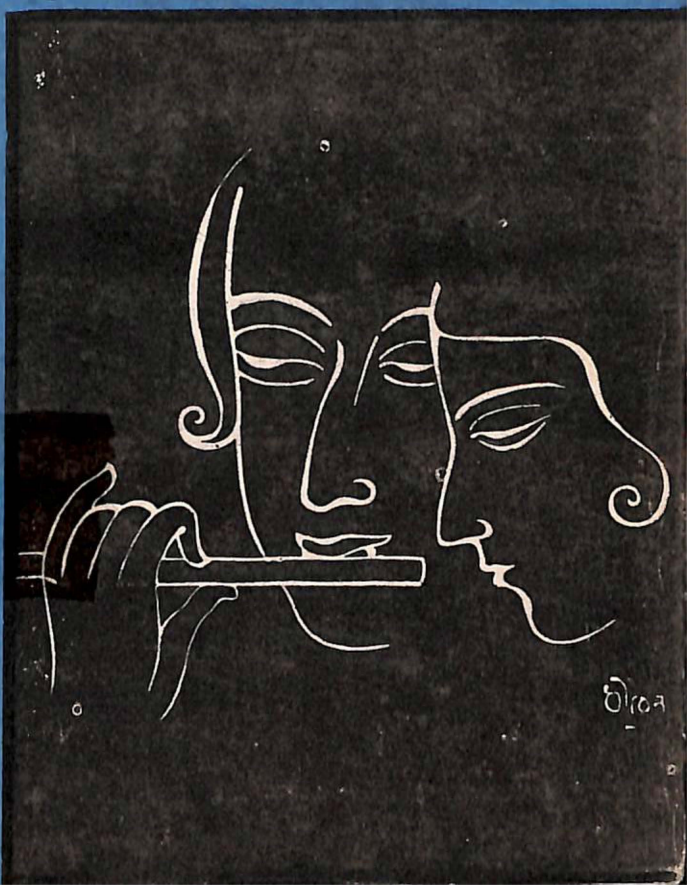

N
891.202 1
J 334 C

भारतीय

MT
891.2021
J334C

जयदेव, जे आर्यभारतीय काव्य-जगतमे प्राचीनमे अन्तिम ओ आधुनिकमे प्रथम छथि, संस्कृत भाषामे मधुरतम गीतक रचयिताक रूपमे विश्वविश्रुत छथि। बारहम शतकक उत्तरार्धमे अवतीर्ण ई पारम्परीण संस्कृत काव्यशैलीक विसर्जन-गीतेटा नहि गओलनि अछि, अपितु भारतीय साहित्यमे एक नवीन युगक लोकभाषा-युगक— आवाहन-गीत सेहो गओलनि। हिनक गीतगोविन्द भक्ति-मार्गी वैष्णवलोकनिक मानू धर्मग्रन्थ भय गेल। एक पश्चिमीय विद्वान् हिनका 'भारतक एक श्रेष्ठतम प्रतिभावान् कवि' कहने छथि, तँ दोसर दिस बंगालक कतोक महान् साहित्यसमीक्षक मानैत छथि जे 'गीतगोविन्द'मे गीत तँ अछि, किन्तु 'गोविन्द' नहि छथि। ओलोकनि एहि काव्यक उघार शृंगारिकताकेँ पसिन्द नहि करैत छथि, ओ पबैत छथि जे एहिमे उदात्त प्रेमभाव बड़ विरल अछि।

जयदेव, एहि तरहेँ, प्रखर मतभेदक विषय रहलाह अछि ओ तेँ हिनक गहन-गम्भीर अध्ययन अपेक्षित अछि। एहि पुस्तकमे डा० सुनीति कुमार चटर्जी, जे भारतक साहित्यविषयक नेशनल प्रोफेसर तथा साहित्य अकादमीक अध्यक्ष छलाह, जयदेव सम्बन्धी यावतीय प्रश्न पर कुशलतापूर्वक विचार कयलनि अछि; हिनक जन्मभूमिक विषयमे बंगाल, उड़ीसा ओ मिथिलाक स्पर्धात्मक दाबीक विवेचन कयलनि अछि; तथा 'सदुक्तिकर्णामृत'मे २६ गोट श्लोक आ' 'सिख आदिग्रन्थ' सँ दू गोट अपभ्रंश गीतक रूपमे नव सामग्री प्रस्तुत कयलनि अछि। जयदेवक ई ऐतिहासिक तथा साहित्यिक मूल्यांकन हमरालोकनिक एतद्विषयक ज्ञानमे व्यापक अभिवृद्धि करैत अछि।

आवरणक खाँचमे चित्र
धीरेन्द्र कृष्णदेव वर्माक एक आरेख सँ।

REVISED PRICE Rs. 15.00
SAHITYA AKADEMI

भारतीय साहित्यक निर्माता

जयदेव

लेखक

सुनीति कुमार चटर्जी

अनुवादक

शैलेन्द्रमोहन झा

साहित्य अकादेमी

Jayadeva : Maithili translation by Shailendra Mohan Jha of Suniti Kumar Chatterjee's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1983), R

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

© साहित्य अकादेमी

Library IIAS, Shimla
MT 891.202 1 J 334 C
00117161

प्रथम संस्करण : १९८३

MT
891.2021
J334C

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय :

रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़शाह रोड, नई दिल्ली-११० ००१

क्षेत्रीय कार्यालय :

ब्लाक V-बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता-७०० ०२९

२९, एल्डाम्स रोड (द्वितीय मंज़िल), तेनामपेट, मद्रास-६०० ०१८

१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई-४०० ०१४

मूल्य SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

मुद्रक :
मुरलीधर प्रेस,
पटना-८०० ००६

Indian Institute of Advanced Study
117161
10.12.04
SHIMLA

राधा ओ कृष्ण

६ठम-७म शताब्दी, पहाड़पुर, राजशाही, बंगाल

बंगला वैष्णव साहित्य ओ इतिहासक विशेषज्ञ

वंगालक वैष्णव - पद - संग्रहक सम्पादक

पचास वर्षसँ घनिष्ठ मित्र

पश्चिम वंगालमे पाण्डुलिपिक अन्वेषणमे सहयात्री

चण्डीदासक पदक सम्पादनमे सहकर्मी

हरेकृष्ण मुखोपाध्यायकेँ

सुनीति कुमार चटर्जी द्वारा

आदर ओ स्नेह पुरस्सर

समर्पित

रस पूर्णिमा (कार्त्तिक पूर्णिमा)

अपन ८३म वर्षक समापनपर

नभम्बर १०, १९७३ — तिथि / नभम्बर २६, १९७३

विषय-सूची

		पृष्ठ
जयदेव : भारतीय आर्य-साहित्यक प्राचीनमे अन्तिम तथा अर्वाचीनमे प्रथम	....	९
जयदेव : जीवन ओ जनश्रुति : वनमालीदासक वंगला जयदेव-चरित	....	११
जयदेव : बंगाल, उड़ीसा एवं मिथिलाक दावा	....	१४
गीत-गोविन्दक अतिरिक्त जयदेवक अन्य रचना — श्रीधरदासक सदुक्तिकर्णामृतक श्लोक	....	१८
ऐतिहासिक जयदेव : प्रेमक लौकिक कवि आ जयदेव : सन्त ओ प्रेमक रहस्यवादी कवि तथा राधा-कृष्णक भक्त : गीत-गोविन्दक मंगल-श्लोक	....	२३
जयदेव-रचनावलीकेँ पूर्ण करैत सदुक्तिकर्णामृतमे छब्बीसटा श्लोक गीत-गोविन्द सहित : जयदेव, विभिन्न शैलीक कवि	....	२६
जयदेवक कवि-सुलभ दिग्विजय—अखिल भारत ओ विश्वमे	....	३५
गीत-गोविन्द : अपन गीतसँ अन्त्य-मध्य-भारतीय-आर्य वा प्रत्न नव्य-भारतीय-आर्य साहित्यक प्रतिरूप	....	३७
सिख गुरुग्रन्थ साहिब (आदिग्रन्थ) मे जयदेवक कहल गेल दूटा भजन	....	४१
जयदेवक गीत-गोविन्द तथा मध्य-वंगला-साहित्यमे 'मंगल' ओ 'पदावली' : बंगालक आदिकवि जयदेव	....	४४
सन्तकविक रूपमे जयदेवक श्रेष्ठता : भक्तमालक अनुशंसा		४६
गीत-गोविन्द—एकर आठटा सर्ग, चौबीसटा गीत एवं तीन सय छियासीटा श्लोक : काव्यक नामकरण	....	४७
गीत-गोविन्दमे 'लौकिक प्रेम' एवं 'दिव्य प्रेम'	....	५४

		पृष्ठ
जयदेव : परम्परागत धार्मिक दृष्टिकोण तथा आधुनिक यथार्थवादी दृष्टिकोण	....	६०
गीत-गोविन्द एवं मध्यकालीन भारतीय चित्रकला	....	६४
गीत-गोविन्दक दूटां गीत, अनुवाद सहित	....	६५
राधा-कृष्ण उपासना तथा हिन्दू मूर्त्ति-विज्ञान	....	७०
गीत-गोविन्दक गीतमे छन्द ओ संगीत	....	७२

१. जयदेव : भारतीय आर्य-साहित्यक प्राचीनमे अन्तिम तथा अर्वाचीनमे प्रथम ।

गीत-गोविन्दक प्रणेता जयदेव संस्कृत-कविमे अग्रगण्य छथि तथा संस्कृत-भाषामे सुमधुर गीतकारक रूपमे विश्वविश्रुत छथि । संस्कृतक श्रेष्ठ महाकविगणक गणनामे हुनक नाम सहजहि अन्तिम महाकविक रूपमे लेल जाइत अछि, यथा अश्वघोष, भास, कालिदास, भर्तृहरि, हर्षदेव, भारवि, भवभूति, माघ, क्षेमेन्द्र, सोमदेव, विल्हण, श्रीहर्ष, जयदेव । सर्व-भारतीय-ख्यातिक संस्कृतक श्रेष्ठ कविगणमे ओ वस्तुतः अन्तिम छथि जनिक एकमात्र कृति **गीत-गोविन्दक** जे प्रभाव परवर्ती कवि ओ विद्वानलोकनि पर पड़ल से प्रायः कालिदासहिक कृतिसँ तुलनीय अछि । भारतवर्षमे संस्कृत-श्लोक-रचनाक परम्परा बारहम शताब्दी अर्थात् जयदेवक उदयकालक बादो अक्षुण्ण रहल । मुदा तुर्कक आगमन आ 'भाषा' (नव्य भारतीय आर्यभाषा एवं मध्य द्रविड़ भाषा) सभक अभ्युदय, परवर्त्ती कालमे संस्कृत-काव्य एवं अन्य कृतिक संरक्षण ओ लोकप्रियताकेँ (ओकर रचनाकेँ नहि) सीमित कऽ देलक । मुसलमानी कालमे वस्तुतः महाकवि सभक आविर्भाव भेल जे सिद्ध करैत अछि जे हिन्दू मानस जाहि रूपेँ अपनाकेँ भारतक श्रेण्य भाषामे व्यक्त कैलक ताहि रूपेँ तखनहु ओहि उच्चतम स्तरक बहुत लग धरि पहुचबामे क्षम छल जे ओ पाँच सय वा हजार वर्ष पहिने विशेष अनुकूल परिस्थितिमे प्राप्त कैने छल । ओलोकनि रचनाकार—गद्यकार ओ कवि छलाह जनिक कृति संस्कृत विद्यावत्ता ओ भारतक काव्य प्रतिभा दुनू पर प्रभा विकीर्ण करैत अछि । ओलोकनि प्राचीने कृतिकार जकाँ सर्वथा मनोयोगपूर्वक प्रकाशमे आनि सूक्ष्मताक संग अनुशीलन करबाक योग्य छथि । ई निर्विवाद जे ओहो लोकनि विगत कतिपय शताब्दीक भारतीय विचारधाराक अतीव देदीप्यमान अभिव्यक्तिकेँ रूपायित करैत छथि । उदाहरण-स्वरूप रूपगोस्वामी एवं जीव गोस्वामी, कवि कर्णपूर,

जगन्नाथ कवि तथा नीलकण्ठ दीक्षितक नाम लेल जा सकैत अछि। तथापि श्रेण्य संस्कृत-काव्यक युग बारहम शताब्दी धरि समाप्त भऽ जाइत अछि। जयदेव समाप्तप्राय युगक विदागानेटा नहि गौलन्हि अपितु ओ भारतीय साहित्य भध्य नवयुग अर्थात् 'भाषा' युगक प्रवेश-गीत सेहो गौलन्हि। एहि तरहेँ ओ भावी युगक पथ-प्रदर्शक बनि युगसन्धि पर ठाढ़ छथि। वस्तुतः जयदेवकेँ भारतीय काव्य मध्य प्राचीनमे अन्तिम तथा अर्वाचीनमे प्रथम कहल जा सकैत अछि।

रहस्यात्मक ओ आध्यात्मिक स्तर धरि उन्नीत, राधा-कृष्णक निश्छल सांसारिक ओ शृंगारिक प्रेमक अत्यधिक मुग्धकारी गायक हैवाक कारणेँ, जयदेव बड़ सहज भावेँ (कमसँ कम भारतीय समाजक वर्ग-विशेषमे) उत्प्रेरित कवि बुझल जाय लगलाह, जे हमरालोकनिक समक्ष लौकिक आवरणमे एहि दिव्य प्रेमकेँ उद्घाटित कैलन्हि। ई ओहि समयमे भेल जखन नव्य हिन्दू पुनर्जागरणक विभिन्न भक्त-सम्प्रदाय, राम ओ कृष्ण सदृश दिव्य पुरुषकेँ उत्कर्षक चरम आदर्श मानि इस्लामक आक्रमणक प्रतिरोध करबाक लेल आगाँ बढ़ल। **गीत-गोविन्दकेँ** धार्मिक कृतिक मर्यादा प्राप्त भेलैक, कारण जे एकर रचयिताकेँ स्वयं कृष्णसँ विशेष अनुगृहीत भक्त ओ सन्तक सम्मान प्राप्त भेलन्हि। अतः जयदेव वैष्णव-परम्परामे अन्तर्भुक्त भऽ गेलाह, जे अखनहु धरि मानल जाइत छथि आ वैष्णव-सन्त-चरितावलीमे हुनक सम्माननीय स्थान छन्हि। हुनक नाम-यश आ तहिना हुनक कृति, विद्वानसँ लऽ कऽ सर्वसाधारण धरि, समाजक प्रत्येक वर्गमे परम्पराक्रमसँ चल आबि रहल अछि। हुनक प्रसंगक कथा सभ धार्मिक प्रेमाख्यान ओ काव्यक अंश थिक जे सामान्य जनजीवनकेँ उत्कृष्ट बनबैत अछि। ई भाग्य भारतक कोनो कविक नहि रहलन्हि अछि—वाल्मीकि ओ व्यास आ किछु अंशमे कालिदासकेँ छोड़ि, जनिकहु दन्तकथा ओ मध्यकालीन धर्मनिष्ठा, साहित्येतिहासक ठोस धरातलसँ बहुत ऊपर कल्पनालोकमे लऽ गेल अछि।

□

२. जयदेव–जीवन ओ जनश्रुति : वनमाली दासक बंगला जयदेव-चरित ।

जयदेवक समय सुस्थापित अछि । ओ बारहम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे भेलाह तथा बंगालक अन्तिम हिन्दू राजा लक्ष्मण सेनक एकटा सभाकवि छलाह । स्व० मनमोहन चक्रवर्त्ती हुनक जीवनसँ सम्बद्ध मुख्य तथ्यक उल्लेख जर्नल एण्ड प्रोसीडिंग्स आफ द एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, १९०६ : "संस्कृत लिटरेचर इन बंगाल ड्यूरिंग सेन रूल", पृष्ठ १६३-१६९मे कैने छथि । जेना प्राचीन भारतक प्रायः प्रत्येक महान ऋषि ओ मुनि, सन्त ओ भक्त तथा कवि ओ लेखकक सम्बन्धमे अछि तहिना जयदेवक जन्म ओ मरणक समय एवं हुनक जीवनक अन्यान्य विषय अज्ञात अछि । खास गीत-गोविन्दसँ हमरासभकेँ केवल हुनक माता-पिता (भोजदेव एवं रामा देवी व वामादेवी वा राधा देवी), पत्नी पद्मावती (रोहिणीक नामे सेहो ज्ञात), हुनक मित्र पाराशर एवं अन्यान्य जे गीत-गोविन्दक गीत सभकेँ गाओल करैत छलाह, आ, हुनक कतिपय समसामयिक कवि जे हुनकहि जकाँ संस्कृतमे रचना कैलन्हि आ' जेसभ आनहु स्रोतसँ ज्ञात छथि, यथा उमापतिधर, शरण, आचार्य गोवर्द्धन एवं धोयी कविराज, एकर अतिरिक्त हुनक मूल-ग्राम केन्दुबिल्वक नाम ज्ञात होइत अछि । गीत-गोविन्दक एकगोट प्राचीन पाण्डुलिपिक पुष्पिकामे, जकर निर्देश जार्ज बुहलर कैलन्हि अछि (द्रष्टव्य-वनमालीदासक 'जयदेवचरित'मे हर प्रसाद शास्त्रीक भूमिका । जयदेवचरितक उल्लेख आगाँ चलि कऽ कैल गेल अछि) कहल गेल अछि जे ओ बंगालक राजा लक्ष्मण सेन छलाह जे जयदेवकेँ कविराजक उपाधि देलन्हि ।

उत्तर भारतक मध्यकालीन वैष्णव सन्त ओ कविक उपाख्यान-संग्रहमे—वैष्णव चरितावलीमे, जयदेवविषयक थोड़ेक काल्पनिक विवरण अछि जे लोकप्रिय अछि मुदा जकर कोनो ऐतिहासिक आधार नहि छैक । जयदेवक

सरस जीवनक थोड़-बहुत परिचय मध्यकालीन वंगला साहित्यमे सेहो प्रकाशमे आयल अछि। आ' और नहि त पन्द्रहम शताब्दीक शेषभागक **शेकशुभोदय** नामक अर्ध-ऐतिहासिक कृति, जे एक प्रकारक अशुद्ध संस्कृतमे रचित अछि आ' आद्योपान्त मध्य-वंगलाक आधारकेँ प्रतिफलित करैत अछि, ताहिमे हमरा सभकेँ जयदेवक प्रसंगमे किछु कथाक वर्णन भेटैत अछि जकर थोड़ेक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भऽ सकैत छैक। एकटा जयदेव छथि जनिका सिख लोकनि प्रसिद्ध सन्त आ' गुरु नानकक पूर्ववर्त्तीक रूपमे जनैत छथि। सिख लोकनिक **गुरु-ग्रन्थमे** एहि जयदेवक नामसँ प्राचीन हिन्दी वा अपभ्रंशक पद सभ अछि। सिख लोकनि जयदेवकेँ महान सन्त ओ कविक रूपमे स्वीकार कैने छथि। जयदेवक विषयमे जतवा प्राचीन सामग्री उपलब्ध अछि से सभटा एतबहि।

मध्य-वंगलाक 'जीवन-चरित' सभमे वा एक तरहेँ प्रेम-कविता सभमे वनमाली दासक **जयदेव-चरित** उल्लेखनीय अछि (१७म शताब्दीक पूर्वार्द्ध, सम्पादक अतुलकृष्ण गोस्वामी, बंगीय साहित्य परिषद्, कलकत्ता, वंगला सन् १३१२=१९०५ ई०, भूमिका-लेखक हर प्रसाद शास्त्री, पृष्ठ-३४)। एहिमे जयदेवक पवित्र आख्यान, हुनक पत्नी पद्मावली तथा कृष्णक प्रति हुनक भक्तिक कथाक वर्णन विस्तारपूर्वक कैल गेल अछि। एहि कृतिक कोनो ऐतिहासिक मूल्य नहि छैक। एतेक धरि जे जयदेवक समयकेँ सेहो कवि बारहम शताब्दीसँ अपना शताब्दीमे लऽ आनलन्हि अछि, जाहि समयमे वर्दमानक सामन्त राजा वनमाली दासकेँ एकमात्र महान हिन्दू शासक प्रतीत होइत छथिन्ह।

संस्कृत-साहित्यमे जयदेव नामधारी अनेको लेखक छलाह। मुदा **गीत-गोविन्दक** कविकेँ छोड़ि आन किनको विषयमे हमरा सभकेँ विशेष सूचना नहि अछि। एहि प्रकारेँ हमरा सभकेँ प्रसिद्ध आलंकारिक अभिनव गुप्त (१००० ई०) द्वारा एकगोट जयदेवक उल्लेख भेटैत अछि जे छन्दशास्त्र पर सूत्रक रचयिता छलाह आ' हर्षत (९००ई०) ओहि सूत्र पर भाष्य लिखलन्हि। अतः ई जयदेव **गीत-गोविन्दक** रचयितासँ कमसँ कम तीन सय वर्ष पूर्वकालिक छलाह। एकटा अन्य जयदेव छलाह जे रामकथाक आधार पर संस्कृतमे **प्रसन्नराघव** नाटकक रचना कैलन्हि। ओ कौण्डिन्य गोत्रीय ब्राह्मण छलाह जनिक पिताक नाम छलन्हि महादेव आ' माताक नाम

सुमित्रा तथा हरि मिश्र हुनक गुरु छलथिन्ह। लगैत अछि जे ओ **गीतगोविन्दक** जयदेवक अव्यवहित कालमे भेलाह, कारण जे काश्मीरी कवि कल्हण १२५७ ई०क लगपाससे संकलित **सूक्तिमुक्तावली** नामक अपन संस्कृत-श्लोक संग्रहमे हुनक **प्रसन्नराघवसँ** उद्धरण देने छथि। ओ कतऽ जन्म लेलन्हि वा रहलाह से त ज्ञात नहि अछि, मुदा किछु गोटे हुनका विदर्भ वा उत्तरी महाराष्ट्रक वासी मानैत छथि। ओ **चन्द्रालोक** नामक एकटा अलंकारग्रन्थ सेहो लिखलन्हि। तथापि एहि पुस्तकक बंगालमे बेशी प्रचार नहि अछि।

□

३. जयदेव—बंगाल, उड़ीसा एवं मिथिलाक दावा।

गीत-गोविन्दक रचयिता जयदेव प्रायः पश्चिम वंगालक वीरभूमि जिलान्तर्गत केन्दुली, प्राचीन केन्दुविल्व नामक गामसँ सार्वभौमिक रूपेँ सम्बद्ध छथि। मुदा जयदेव पर वंगाल तथा पूर्वीय भारतक अन्यान्य भाग द्वारा सेहो दावा कैल जाइत अछि। एकगोट परम्परा, जे ततेक जोरगर नहि अछि, हुनका उत्तर-पश्चिम बंगालक (सम्प्रति वंगलादेशमे) बगुआरा वा बोगरा जिला लऽ जाइत अछि। एहि सम्बन्धमे जे साक्ष्य अछि से विश्वसनीय नहि आ' एहि साक्ष्यक प्रति आग्रहो नहि कैल गेल अछि। हमरालोकनिक सूचनाक स्रोत छथि भैरवि गामवासी श्री धीरेन्द्रनाथ बाल। ई गाम केन्दुली नामक एकटा छोट गामसँ सात कोसक दूरी पर अछि। एहि केन्दुली गाममे पर्याप्त संख्यामे हिन्दूक आबादी छल। कहल जाइत अछि जे पूर्वमे ओतय जयदेवक सम्मानमे वार्षिक मेला लागल करैत छल आ' ओतय 'जयदेव ठाकुर'क नाम पर एकटा विशाल पोखरि अछि। ग्रामवासी द्वारा जयदेवक डीहक ध्वंसावशेष एहि पोखरिक कातमे कहल जाइत अछि। एहि केन्दुली गाममे ध्वस्त मन्दिरक पुरान चिह्न तथा मूर्त्तिखण्ड सभ भेटैत अछि। एकर सभसँ लगक रेल-स्टेशन जयपुर हाट प्रायः चारि कोस पर अछि। एहि केन्दुलीक विषयमे हमरासभकेँ एतबहि जानल अछि।[1]

"उड़ीसा राज्य म्यूजियम, भुवनेश्वरक संग्रहमे उड़ीसाक संस्कृत पाण्डु-लिपिक वर्णनात्मक सूची, जिल्द—II" नामक सुप्रमाणित ग्रन्थमे, जकर रचयिता म्यूजियमक डाइरेक्टर श्री केदारनाथ महापात्र छथि (उड़ीसा साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित, भुवनेश्वर, १९६०), जयदेव एवं हुनक **गीत-गोविन्द** पर विभिन्न दृष्टिएँ विवेचित हुनक एक टा विस्तृत निबन्ध अछि (पृष्ठ-xxxvi-

१. द्रष्टव्य—कवि जयदेव ओ श्रीगीत-गोविन्द, लेखक डा० हरेकृष्ण मुखर्जी साहित्यरत्न, कलकत्ता, चतुर्थ संस्करण, अग्रहायण १३७२, पृष्ठ-३६, ३७, पाद टिप्पणी।

Lvi)। एहि विद्वत्तापूर्ण लेखमे साहित्यिक एवं अन्य आधार पर, जयदेवक कतिपय समसामयिकके, एतेक धरि जे जयदेवके सेहो, उड़ीसाक हैवाक दावा कैल गेल अछि। जयदेवक केन्दुबिल्वके, पुरी जिलाक बलिपट्टन थानाक एकटा पैंघ गामसँ, जे आब केन्दुलीक नामे सेहो जानल जाइत अछि, अभिन्न मानल गेल अछि। जयदेवक विष्णुविषयक पौराणिक धारणाके सिद्ध करबाक लेल मूर्तिकरणसँ प्रतिमाशास्त्रक साक्ष्य सेहो प्रस्तुत कैल गेल अछि जे ओ निश्चत रूपे उड़ीसा-मूलक थिक। ई अवश्य जे उड़ीसाक साहित्य पर **गीत-गोविन्दक** अतिशय प्रभाव पड़ल आ' एहि प्रभावके, जयदेवके उड़ीसाक कवि हैवाक कारण मानि लेल गेल अछि।

मुदा **गीत-गोविन्द** एकटा एहन कृति अछि जे प्रकाशमे अयलाक तत्कालहि सम्पूर्ण भारतके प्रभावित कैलक। बंगला साहित्य आ' तहिना गुजराती साहित्य ओ हिन्दी वा व्रजभाषा साहित्य समान रूपे एहि पुस्तकक प्रभावमे छल। केवल बंगालमे प्रचलित दृढ़ परम्पराक आधार पर, जे जयदेव वीरभूमि स्थित केन्दुलीक छलाह, जयदेवक जन्मभूमिक विषयमे जोर देबाक कोनो तर्क नहि अछि। मुदा किछु श्लोक, जकर रचयिता जयदेवहिके कहल जाइत छन्हि, आ' जे श्रीधरदास द्वारा संकलित संस्कृत संग्रहमे अछि—जकरा विषयमे आगाँ चलि कऽ कहल गेल अछि आ' जाहि श्लोक सभके आगाँ चलि कऽ एहि पुस्तिकामे उद्धृत कैल गेल अछि—द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य एकर निर्णायक प्रतीत हैत, जे जयदेव बंगालक छलाह तथा राजा लक्ष्मण सेन जे बंगालमे भागीरथी तटपर अवस्थित नवद्वीपमे १२०३ ई० धरि शासन कैलन्हि, तनिक सभासद छलाह। एहि साल बख्तियार खिलजीक नेतृत्वमे तुर्कक एकटा दल बिहारसँ आबि नवद्वीप पर आक्रमण कऽ देलक आ' लक्ष्मणसेनके पड़ा कऽ पूर्वी बंगाल चल जैबाक लेल बाध्य कऽ देलक। एहि तरहें तुर्क सभ बंगालसँ हिन्दू शासनके निःशेष कय ओतय प्रभावकारी साम्राज्य स्थापित कैलक। पूर्वी भारत (मिथिला सहित) मे उड़ीसा वस्तुतः संस्कृत विद्याक महत्त्वपूर्ण केन्द्र रहल अछि तथा संस्कृत-साहित्यके ओकर किछु विशिष्ट लेखक प्रदान करबाक श्रेय ओकरे छैक।

मुदा **गीत-गोविन्दक** रचयिताक रूपमे, जयदेवक नाम लऽ कऽ हुनक स्मृतिके, प्रायः आठ सय वर्षसँ वार्षिक लोकप्रिय मेला द्वारा पश्चिम बंगालमे वीरभूमि जिलान्तर्गत अजय तटवर्ती केन्दुली गाममे, जीवन्त बना कऽ राखल गेल अछि, जे जयदेवक नामसँ सम्बद्ध अछि।

एहि तरहेँ, किछु दिन पूर्व डा० हरेकृष्ण मुखर्जी द्वारा, आन वस्तुक संग-संग, हमर ध्यान वीरभूमि क्षेत्र वा जिलान्तर्गत केन्दुलीक एकगोट उल्लेख दिश आकृष्ट कैल गेल जे इएह जयदेवक जन्मस्थान थिकन्हि। ई उल्लेख १७४६ ई० (बंगला सन् ११५३) क एकगोट बंगला पाण्डुलिपिक पुष्पिकामे अछि जाहिमे गोपीचरण विद्याभूषण (एहि सुप्रमाणित पाण्डुलिपिक विषय-वस्तु अछि हुनक **हरिनामामृत** व्याकरण पर संस्कृत टीका जे एही ग्रन्थक एकगोट अपूर्ण टीकाक समापन थिक) निश्चित रूपेँ निर्देश करैत छथि जे ओ केन्दु-विल्वक रहनिहार थिकाह जे **गीत-गोविन्दक** कवि जयदेवक सेहो निवासस्थान छल। ई गाम हुनका समयमे केन्दुली नामे ज्ञात छल जे वीरभूमि जिलामे अछि।

पश्चिम बंगालमे केन्दुली अखनहु धरि वैष्णव तीर्थाटनक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। जयदेवक सम्मानार्थ वैष्णव सन्त ओ भिक्षुक तथा बाउल सदृश अन्य संबंधित सम्प्रदायक जे वार्षिक मेला लगैत अछि, ताहिमे तीर्थयात्री सभक अपार संख्यासँ व्यापक उपस्थिति रहैत अछि।

श्री महापात्र कहलन्हि अछि जे एकटा और गाम अछि कन्दोली नामक, जे मिथिलामे अछि। किछु मैथिल सेहो दावा करैत छथि जे जयदेव तिरहुत वा तीरभुक्ति अर्थात् मिथिलाक वासी छलाह। वैष्णव परम्परा (जाहि रूपमे ओ **भक्तमाल टीकामे** संरक्षित अछि) मे कहल गेल अछि जे जयदेवक श्वशुरक इच्छा अपन पुत्रीकेँ पुरीक जगन्नाथ-मन्दिरमे देव-नर्तकी बनाबक छलन्हि, मुदा जगन्नाथ वा विष्णु, स्वयं हुनका स्वप्नमे पुत्रीक विवाह जयदेवसँ करा देबाक आदेश देलथिन्ह।

एकटा दोसर परम्परा **शेकशुभोदय** मे संरक्षित अछि। (**शेकशुभोदय** वा "शेखक पुण्यावतार" इस्लामी प्रेरणाक कृति थिक जाहिमे एक गोट मुसलमान सन्तक जीवन ओ चमत्कारक वर्णन अछि। ई मुसलमान सन्त, १२०३ ई० मे बख्तियार खिलजीक नेतृत्वमे तुर्कक जे आगमन भेल ताहिसँ पूर्वहि, राजा लक्ष्मण सेनक दरबारमे आयल छल। ई ग्रन्थ बंगला पर आधारित एक प्रकारक अशुद्ध संस्कृतमे लिखित अछि आ' पन्द्रहम शताब्दीक अन्त वा सोलहम शताब्दीक आदिमे कोनो समयमे, बारहम-तेरहम शताब्दीक पुरान परम्पराक अनुसरण करैत प्रस्तुत कैल गेल। डा० सुकुमार सेन द्वारा हृषीकेश सिरीज, कलकत्ता, १९२० सँ बंगला लिपिमे टिप्पणी सहित एकर

सम्पादन कैल गेल अछि; एकर द्वितीय संस्करण देवनागरी लिपिमे टिप्पणी ओ प्रस्तावना तथा वंगला अनुवाद सहित, विविलियोथिका इण्डिका सं० २८६, एसियाटिक सोसाइटी, कलकत्तासँ भेल अछि।) ई परम्परा पद्मावतीकेँ कुशल गायिका सेहो सिद्ध करैत अछि। अपन पतिक संग ओ वंगालक वाहर (मिथिला) क एकटा प्रसिद्ध संगीतज्ञ वुढ़न मिश्रक संग प्रतियोगितामे भाग लेलन्हि। जयदेव जखन अपनाकेँ "पद्मावती-चरण चारण-चक्रवर्ती" कहैत छथि त स्वयं अपन पत्नीकेँ एकगोट कुशल नर्तकी हैबाक संकेत करैत छथि। ई सर्वथा वुझवा जोकर होइत अछि कारण जे पद्मावतीक माय-बापक इच्छा पद्मावतीकेँ जगन्नाथ मन्दिरक देवदासीक रूपमे अर्पित कऽ देबाक छलन्हि आ' तदनुसार हुनका नृत्य एवं संगीतमे प्रशिक्षित कैल गेल छलन्हि। मुदा अन्ततोगत्वा, जयदेवक संग हुनकर विवाह भेलन्हि। वंगालमे प्रचलित परम्पराक अनुसार ई विवाह अत्यन्त सुखद छल। पति-पत्नी, दुनू गोटे कृष्णक प्रति निष्ठाशील रहथि आ' जयदेवकेँ अपन पत्नीक प्रति जे प्रेम ओ गर्व छलन्हि से हुनक कृतिमे पद्मावतीक प्रति अनेक प्रसंगमे उपदर्शित अछि।

□

४. गीत-गोविन्दक अतिरिक्त जयदेवक अन्य रचना—श्रीधर-दासक सदुक्तिकर्णामृतक श्लोक।

जयदेवक समसामयिक, वटुदासक पुत्र श्रीधर दास, जे विद्वान ओ कवि दुनू छलाह, संगहि लघु सामन्त भूपति छलाह, शाके ११२७ (१२०६ ई०) मे **सदुक्तिकर्णामृत** नामसँ एकटा संस्कृत-श्लोक-संग्रहक संकलन कैलन्हि। बंगालमे मुसलमानकालक प्रवर्त्तक तुर्क सभक विहार ओ उत्तर भारतसँ आगमनक ठीक पूर्वक, वंगालमे रचित संस्कृत-साहित्यक अध्ययन तथा गौड़ एवं वंग अर्थात् पश्चिम ओ पूर्व वंगाल दुनूक काव्य-प्रवृत्तिक संवर्धनक हेतु एहि संग्रहक अप्रतिम महत्त्व अछि। **सदुक्तिकर्णामृत** समग्र रूपेँ सर्वप्रथम १९३३ ई०मे लाहोरसँ स्व० रामावतार शर्मा ओ स्व० हरदत्त शर्माक सम्पादकत्वमे प्रकाशित भेल। किछु समय पूर्व १९६५ ई०मे प्रो० डा० सुरेशचन्द्र बनर्जी द्वारा एकटा नव संस्करण, फर्मा के० एल० मुखोपाध्यायसँ कलकत्तामे प्रकाशित भेल अछि। बहुत दिन पहिने १८७६मे, राजेन्द्र लाल मित्र एहि कृति पर एकटा निबन्ध लिखने छलाह आ' तदुपरान्त १८८०मे जर्मन विद्वान थियोडर आफ्रेट दू गोट पाण्डुलिपिक आधार पर एहि कृतिक विवेचन कय जर्मन भाषामे लेख सभ लिखलन्हि आ' पाश्चात्य जगतकेँ एहि कृतिसँ परिचय करौलन्हि। आफ्रेट **सदुक्तिकर्णामृत**क विषय-वस्तुक विश्लेषण कंने छलाह आ' एहि पर हुनक जे टिप्पणी सभ छल ताहिमे सँ पर्याप्त सामग्रीक उपयोग स्व० डा० एफ० डब्ल्यू० थोमस, ओही ढंगक अन्य संस्कृत-संग्रह, **कवीन्द्र-वचन-समुच्चय**क सम्पादनमे कैलन्हि। **सदुक्तिकर्णामृत**मे हमरालोकनिकेँ विभिन्न छन्दमे रचित प्रायः २४०० संस्कृत श्लोक भेटैत अछि जकरा सभकेँ पाँचगोट प्रवाह अर्थात् खण्डमे विन्यस्त कैल गेल अछि। एहिमेसँ नहि किछु त पाँच सय श्लोकक रचयिताक रूपमे हमरा सभकेँ प्रायः पाँच सय कविक नाम भेटैत अछि। लगैत अछि जेना एहि पाँच सय कविगणमे तीन सयसँ बेशी वंगाल (गौड़-वंग)क छलाह। पाँचगोट प्रवाह, जाहिमे एहि अनतिदीर्घ संग्रहक विभाजन कैल गेल अछि, एहि रूपक अछि :

(१) अमर-प्रवाह वा देव-प्रवाह अर्थात् देवताविषयक खण्ड; (२) शृंगार-प्रवाह अर्थात् प्रणयविषयक खण्ड; (३) चाटु-प्रवाह अर्थात् चाटुकारिता वा प्रशंसाविषयक खण्ड; (४) अपदेश-प्रवाह अर्थात् व्याज वा तर्क विषयक खण्ड; (५) उच्चावच-प्रवाह अर्थात् उत्थान-पतन विषयक खण्ड। एहि प्रत्येक प्रवाहक अन्तर्गत अनेक वीचि (लहरि) वा छोट-छोट वर्ग-विभाजन अछि आ' प्रत्येक वीचि पाँच-पाँचटा श्लोकसँ संसिद्ध अछि। एहि तरहेँ हमरा सभकेँ प्रथम प्रवाह अमर-प्रवाहमे ९५; शृंगार-प्रवाहमे १७९; चाटु-प्रवाहमे ५४; अपदेश-प्रवाहमे ७२; तथा उच्चावच-प्रवाहमे ५६ टा वीचि प्राप्त होइत अछि।

एहि प्रवाह सभमे अन्तर्भुक्त बहुसंख्यक संस्कृत-श्लोकमे १२०० ई० अर्थात् बंगाल पर तुर्की आधिपत्यक तत्कालपूर्वक बंगाली जनसमाजक काव्य-प्रवृत्ति ओ संवेदनशीलताक अभिव्यक्ति भेटैत अछि। एहि श्लोक सभमे हम सभ बंगला भाषाक परम्परा आ' संगहि काव्यात्मक जीवनकेँ प्रचुर पारमाणमे प्रतिफलित पबैत छी। अनेक श्लोकमे हमरा सभकेँ मध्यकालीन बंगला काव्य साहित्य तथा एतेक धरि जे आधुनिक बंगला-काव्यक पर्याप्त पूर्वाभास प्राप्त होइत अछि। यद्यपि **सदुक्तिकर्णामृत** संस्कृतमे रचित अछि तथापि बंगला-काव्य-साहित्यक अध्ययनक लेल एकरा निश्चित रूपेँ ओकर एकटा मौलिक स्रोतमे सँ मानल जा सकैत अछि।

अस्तु। **सदुक्तिकर्णामृत**मे एकतीसटा विविध श्लोककेँ विभिन्न प्रवाहक अन्तर्गत स्थान भेटल अछि जाहिमे प्रत्येककेँ 'जयदेवस्य' कहि कऽ उपस्थित कैल गेल अछि। **गीत-गोविन्दक** कविक अतिरिक्त पूर्व-कथित दूगोट जयदेव मेसँ, संस्कृत छन्दशास्त्रक रचयिता जयदेव प्रथम, कविक रूपमे नितान्त अज्ञात छथि; आ' जयदेव द्वितीय, जे **प्रसन्न-राघवक** रचनाकार छलाह, हमर जयदेवक समसामयिक रहल होथु मुदा एना प्रतीत होइत अछि जे एहि संग्रहक संकलन-काल धरि हुनक नाम-यश बंगाल नहि पहुँचल छल। यदि एकर संकलन-कर्त्ता श्रीधर दास **गीत-गोविन्दक** एहि सुप्रसिद्ध कविसँ भिन्न कोनो अन्य जयदेवकेँ जनैत छलाह तँ हुनकासँ निश्चित रूपेँ एहि विषयक उल्लेखक अपेक्षा कैल जा सकैत छल। श्रीधर दास, हमर जयदेवकेँ जे राजा लक्ष्मण सेनक सभाक प्रसिद्ध व्यक्ति छलाह आ' जनिक **गीत-गोविन्दक** पाँच टा श्लोक केँ, जयदेवक कहि कऽ देल गेल एकतीसटा श्लोकमे ओ उद्धृत कैने छथि,

समान नामधारी कतिपय अन्य कविक संग मिश्रित नहि करितथि। तदनुसार, **गीत-गोविन्दक** एहि पाँचो श्लोकक आधार पर, जकरा श्रीधर दास उचितें जयदेवक कहलन्हि अछि आ' एहू पर विचार करैत जे श्रीधर दास राजा लक्ष्मण सेनक राजसभाक उच्च पदाधिकारी छलाह, (सद्‌ुक्तिकर्णामृतक भूमिकामे श्रीधर दास कहने छथि जे हुनक पिता वटुदास, राजा लक्ष्मण सेनक अतिशय कृपापात्र छलाह) ई सोचब सर्वथा संगत जे हुनका द्वारा उद्धृत एकतीसो श्लोकक रचयिता **गीत-गोविन्दक** कविकेँ छोड़ि आन केओ नहि छलाह। **सदुक्तिकर्णामृतमे** एकानवेटा श्लोककेँ उमापतिधर-रचित कहल गेल अछि जे, जेना **गीत-गोविन्दमे** उल्लिखित अछि, जयदेवक समसामयिकमे सँ छलाह; छ'टा श्लोक **आर्यासप्तशतीक** प्रसिद्ध लेखक आचार्य गोवर्द्धनक अछि; एकैसटा शरणक; आ' अन्य बीसटा धोयीक जाहिमे सँ दूटा धोयीक प्रसिद्ध कृति **पवनदूतक** थिक। (कालिदासक **मेघदूतक** ई रोचक अनुकरण सम्प्रति मुद्रित भऽ गेल अछि)। एहि चारू कविक उल्लेख जयदेव अपन **गीत-गोविन्दमे** कैने छथि। आ' एकर अतिरिक्त एगारह टा श्लोक राजा लक्ष्मणसेनक पुत्र राजकुमार केशवसेनक आ' पाँचटा श्लोक हलायुधक अछि—ईहो लोकनि समान रूपेँ जयदेवक समसामयिक छलाह। अथच अनेक अन्य कविक रचना सभ अछि जे जयदेवक समयक परिवृत्तमे छलाह।

सोलहम शताब्दीक मध्यावधिमे, वृन्दावनवासी बंगालक प्रसिद्ध वैष्णवाचार्य रूपगोस्वामी संस्कृत-वैष्णव-काव्यक अपन प्रसिद्ध संग्रहक संकलन कैलन्हि। (**पद्यावली** नामे ज्ञात) एहि संग्रहमे सेहो एहि सभ कविक अनेको श्लोक भेटैत अछि।

श्रीधर दास द्वारा उद्धृत जयदेवक एहि सभ श्लोकमे हमरा सभकेँ वीर रसक दृष्टान्त-स्वरूप श्लोक सभ भेटैत अछि, केवल शृंगार रसक नहि जे **गीत-गोविन्दमे** विवेचित एकमात्र रस थिक। अपरंच, जयदेव सम्प्रति बंगाल ओ पूर्वी भारतमे श्रीकृष्णक भक्त तथा मूलतः वैष्णव कविक रूपमे प्रतिष्ठित भऽ चुकल छथि। मुदा एहि एकतीसो श्लोकमे शिवक प्रशस्तिक श्लोक सेहो अछि। एहि समस्त श्लोकसँ देखब जे जयदेवक काव्य-प्रतिभा केवल श्रीकृष्णक सुमधुर मुरली-ध्वनि धरि सीमित नहि रहलन्हि—आयुधक झंकार ओ तूर्यनाद सेहो हुनका काव्य-रचनाक लेल आकृष्ट कैलकन्हि। युद्ध-क्षेत्र ओ रणभेरीक निनाद सदृश विषय पर ओ ओजपूर्ण श्लोकक रचना कैने छलाह। एहि सभसँ एना प्रतीत हैत जे जयदेव प्रारम्भमे केवल वैष्णव भक्त

वा सन्त नहि छलाह। ओ प्रायः स्मार्त वा शैव सद्गृहस्थ छलाह जे समान आस्थाक संग पुराण-सम्मत हिन्दू धर्मक पाँच (वा छ') प्रधान देवी-देवताक—गणेश, सूर्य, विष्णु, शिव एवं उमा तथा कोनो वर्गमे, खास कऽ दक्षिण भारतमे कुमार वा कार्त्तिकेयक (पंचोपासक वा षडुपासक)—भक्ति वा उपासना कैलन्हि। परवर्ती कालमे गौड़ीय वा वंगाल वा नवद्वीप विचारधाराक वैष्णवलोकनि द्वारा हुनक यश महान वैष्णव कवि ओ सन्तक रूपमे प्रतिष्ठापित कैल गेल, कारण जे ओ सभ प्रभावशाली सम्प्रदायक रूपमे स्थापित भऽ रहल छलाह। अतः ई सर्वथा सम्भव जे मूलतः कोनो तरहेँ से नहि छलाह। वैष्णव-समाज तथा वैष्णव मत वा सम्प्रदायक जे विकास हम सभ वंगालमे चैतन्यक परवर्ती युगमे पबैत छी से एगारह सय-बारह सय ई०क अवधिमे सम्भव रहल हैत, एहि विचारकेँ स्वीकार नहि कैल जा सकैत अछि। स्व० म० म० हर प्रसाद शास्त्री विद्यापतिकृत कीर्त्तिलताक अपन संस्करणक भूमिकामे स्थापित कयलन्हि अछि जे मिथिलाक कवि विद्यापति ओहि वर्ग सदृश साम्प्रदायिक भक्त ओ कवि नहि छलाह जे वंगालमे वैष्णव महाजन अर्थात् लेखकक ओ वर्ग जे राधा-कृष्णक प्रेम पर धर्म-शृंगारिक पदक रचना कैलन्हि, जकरा अतीव भक्त्यात्मक ओ रहस्यात्मक रचना बुझल गेल आ' जे सभ धार्मिक अनुष्ठान ओ आध्यात्मिक भावावेश दुनू भावसँ गाओल गेल। विद्यापति एकटा सामान्य स्मार्त्त ब्राह्मण छलाह जे एकहि संग विष्णु ओ शिव, लक्ष्मी ओ उमा, राधा ओ गंगा तथा उत्तर-मध्यकालीन पौराणिक ग्रन्थक अन्यान्य देवी-देवताक आराधना कैलन्हि। इएह बात जयदेवोक विषयमे कहल जा सकैत अछि, यद्यपि ओ **गीत-गोविन्दक** कवि छलाह जे आब खास कऽ पूर्वीय भारतक साम्प्रदायिक वैष्णव लोकनि द्वारा वैष्णव-धर्म-काव्यक रूपमे अतीव श्रद्धाक संग देखल जाइत अछि।

□

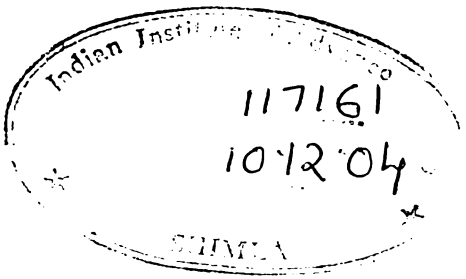

Indian Institute ...
117161
10.12.04
SHIMLA

५. ऐतिहासिक जयदेव : प्रेमक लौकिक कवि; आ जयदेब : सन्त ओ प्रेमक रहस्यवादी कवि तथा राधा-कृष्णक भक्त : गीत-गोविन्दक मंगल-श्लोक ।

जयदेवक किछु श्लोकक अर्थ-प्रकाशन वा अनुवादमे, ओहि सभ पर साम्प्रदायिक दृष्टिक आक्षेपणसँ बहुत राश जटिलताक उद्‌भव भेल अछि ।

गीत-गोविन्दक मंगल-श्लोक अछि—

"मेघैर्मेदुरमम्बरं वन-भुवः श्यामास्तमाल-द्रुमै
र्नक्तंभीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय ।
इत्थं नन्द-निदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुञ्ज-द्रुमं
राधा-माधवयोर्जयन्ति यमुना-कूले रहः केलयः ॥"

एकर सरल अर्थ ई जे कृष्णक धर्मपिता नन्दक कहलासँ राधा कृष्णकेँ घर पहुँचाबय गेलीह । ई एहि लेल जे कृष्णकेँ मेघाच्छन्न अन्हरिया रातिमे एसकर घूरिकऽ जैबामे डर होइत छलन्हि। दिव्य प्रेमी-प्रेमिका मानव-प्रेमी-प्रेमिक सदृश एहि सुअवसरक लाभ उठौलन्हि। ई लीला एकटा सामान्य स्थितिक संगठन करैत अछि जकर कवि भक्तिभावसँ अभिवादन करैत छथि । संशयशून्य, स्नेहसिक्त वृद्ध नन्द, प्रेमी-युगलक सम्पूर्ण इच्छा-पूर्तिक मार्ग सहल कऽ दैत छथिन्ह आ' एहि तरहेँ हुनका लोकनिक मिलनमे अज्ञात भावेँ सहायता करैत छथिन्ह । मुदा एहि सरल ओ प्रकटतः सर्वथा मानवीय स्थिति दिस बंगालक परवर्ती वैष्णव-धर्म-परक-पाण्डित्य-पद्धतिक ध्यान नहि गेल, तथा एकगोट अनुमोदित विवेचनमे, जाहिमे एहि दृश्यमे नन्दक उपस्थितिकेँ नहि सहन कैल जा सकैत छल, 'नन्द-निदेशत.' एहि सामासिक शब्दक असंदिग्ध मन्तव्य अर्थ नन्दक आदेशानुसारकेँ स्वीकार नहि कय, एकर अर्थ प्रेमी-प्रेमिकाक सखा द्वारा आनन्ददायी सन्देश वा हुनका लोकनिकेँ आनन्द देबाक उद्देश्ये, लगाओल

गेल । एहि तरहेँ प्रथम दुइ पंक्तिकेँ नन्दक उक्ति नहि मानि राधा-कृष्णक कल्पित सखाक उक्ति मानल गेल ।

समसामयिक संकलन **सदुक्तिकर्णामृतमे** दूटा मिलैत श्लोक अछि जकर रचना उपर्युक्त श्लोकक अनुकरण पर भेल अछि । एहिमेसँ एकटाकेँ राजा लक्ष्मण सेनक पुत्र केशव सेनक रचल कहल गेल अछि आ' दोसरकेँ स्वयं राजाक । राजकुमार केशव सेनकेँ स्पष्टतः जयदेवक **गीत-गोविन्दक** मंगल-श्लोकसँ मिलैत श्लोक प्रस्तुत करब अभिप्रेत छलन्हि । एहि लेल ओ समरूप अवसरक संकेत कैलन्हि जे कृष्णक प्रतिपालिका माता यशोदा द्वारा, प्रेमी-प्रेमिकाक लेल, अज्ञातभावेँ घटित कैल गेल । केशव सेनक श्लोक, जे ओही शार्दूलविक्रीड़ित छन्दमे अछि, एहि तरहेँ अछि :

आहूताद्य महोत्सवे (वा मयोत्सवे) निशि गृहं शून्यं विमुच्यागता
क्षीवः प्रेष्यजनः कथं कुलवधूरेकाकिनी यास्यति ।
वत्स त्वं तदिमां नयालयमिति श्रुत्वा यशोदा-गिरो
राधामाधवयोर्जयन्ति मधुरस्मेरालसा दृष्टयः ॥

एहि श्लोकमे यशोदा कहैत छथिन्ह कृष्णसँ, राधाकेँ घर पहुँचा अयबाक लेल । राधा यशोदाक ओतय भोजमे आयलि छलीह । कृष्णकेँ एहि लेल कहैत छथिन्ह जे सेवक सभ, जकरा संग राधाकेँ पठाओल जा सकैत छल, भोजमे पीबि कऽ बेसुध अछि । संकलनमे उद्धृत केशव सेनक एहि श्लोककेँ **गीत-गोविन्दक** मंगल-श्लोकसँ मिला कऽ पढ़ला उत्तर ई सुस्पष्ट अछि जे 'नन्द निदेशतः' क अर्थ 'नन्दक आदेशसँ' सैह हैत, बंगालक परवर्ती वैष्णव मतक धर्मपरक पाण्डित्य-पद्धति द्वारा एहि शब्दक जे अर्थ लगाओल गेल अछि से नहि ।

सदुक्तिकर्णामृतमे जाहि श्लोककेँ लक्ष्मण सेन रचित कहल गेल अछि तकरहु उद्धृत कैल जा सकैत अछि । एकर जे प्रेरणा अछि सेहो सुस्पष्ट अछि :

कृष्ण त्वद्वनमालया सहकृतं केनापि कुञ्जोदरे
गोपीकुन्तलबर्हदाम तदिदं प्राप्तं मया गृह्यताम् ।
इत्थं दुग्ध-मुखेन गोप-शिशुना ख्याते व्रपानस्रयो
राधा-माधवयोर्जयन्ति वलितस्मेरालसा दृष्टयः ॥

एतय वृद्ध राजा एहि परिस्थितिकेँ ई संकेत दय समाप्त करैत प्रतीक होइत छथि जे प्रेमी-प्रेमिकाक प्रणय-क्रीड़ा एक गोट निर्दोष गोपशिशु (दुग्ध-मुखेन, दुधमुँहा वा दग्धमुखेन मुहझौंसा अर्थात् मूर्ख ओ जड़ बालक) द्वारा अनजानहि प्रकट कऽ देल गेल। ओ गोपशिशु बिना सोचनहि सभक बीच बाजि उठल—"हे कृष्ण! हम एकटा कुंजमे गोपीक एहि केशगुच्छकेँ अहाँक ग्रीवाक वनमालाक संग ओझरैल पौलहुँ अछि। हे लिअ।" गोपशिशु द्वारा एहि तरहेँ कहल गेला उत्तर राधा ओ कृष्ण दुनू गोटे लाजसँ मूड़ी झुका लेलन्हि आ' हुनका लोकनिक दृष्टि अपन-अपन मुसकानसँ सुन्दर ओ सालस भऽ उठल—दुनूक एहि प्रकारक दृष्टिक जय हो।

एहि तीनू श्लोकक चारिम पंक्तिक पूर्वार्द्धक (राधामाधवोर्जयन्ति....) ध्रुवा-सदृश समानता ध्यातव्य अछि। ई तीनू श्लोक कदाचित् राजसभामे समस्या पूर्तिक लेल श्लोक-रचनाक सर्वथा आनन्दप्रद घटनाकेँ अंकित करैत अछि जाहिमे राजा, हुनक पुत्र ओ ओहि युगक अत्यन्त प्रतिष्ठित कवि भाग लेलन्हि। राजसभाक अन्यान्य सदस्य प्रशंसक रूपेँ छलाह, जाहिमे एकटा छलाह संकलनकर्त्ता श्रीधर दास जे भावी पीढ़ीक लेल राजकवि लोकनिक तीनू श्लोककेँ लिपिबद्ध कऽ देलन्हि।

राधा-कृष्णक प्रणयलीलामे हुनक अभिसार-संकेतक संदर्भमे—जाहिमे वैष्णव रूढ़िवादिता अपन उपयुक्तताक विचारेँ, एहि दृश्यमे प्रेमी-प्रेमिकाक मिलनमे सहायक हैबाक लेल गेलहौट (Galahaut) सदृश (जेना अर्थुरियन दन्तकथामे गुनेभियर (Guenevere) ओ लैंसलोट (Lancelot) क प्रसंगमे अछि) कृष्णक पिताक उपस्थितिकेँ नहि सहन क' सकैत छल—एकर जे महत्व रहय, तकर अतिरिक्त, एहि प्रथम श्लोकक मुख-पंक्तिक बड़ बेशी काव्यात्मक मूल्य अछि आ ओ अछि निविड़ मेघावृत पावस रात्रिक आश्चर्यजनक आह्वानक रूपमे।

भारतक अनेक महान लेखक ओ आलोचक लोकनिक ध्यान एहि विषय दिश गेल अछि। जयदेवक गीत-गोविन्दमे प्रकृतिकेँ आह्लादक वसन्त ऋतुक पृष्ठभूमि प्राप्त छैक। ई सूर्य-किरणसँ दीप्तिमान आ' हरियर लतादि ओ पुष्पादिक विविध रंगसं अलंकृत अछि तथा पक्षीक कलरव एवं मधुमाछीक गुंजन-संगीतसँ मुखरित ओ फूलक सुगन्धिसँ सुरभित अछि। मुदा पहिले श्लोकक मुख-शब्दावली हमरा सभक समक्ष वर्षाक घनसाच्छन्न ओ शान्त

वातावरणकेँ आनि उपस्थित करैत अछि। आलोचकलोकनि एकर विशेषताक व्याख्या करबाक प्रयास कैलन्हि अछि। एकटा बात स्पष्ट अछि। पहिल वाक्यांशमे, ओकर यथार्थ शब्द-चित्र द्वारा अद्‌भुत काव्य-सौन्दर्य अछि। एकरा ओकर सारगर्भितासँ अधिकाधिक विश्वसनीय बनाओल गेल अछि जे जापानी टंकाक सुरुचिपूर्ण वाग्मिता ओ कलात्मक प्रांजलताक स्मरण दियाबैत अछि :

मेघैर्मेदुरमम्बरं वनभुवः श्यामास्तमाल-द्रुमैः
नक्तं··· ।
[नीरद-निकर नितान्त निविड़ नभ नयनो नहि संचारी ।
बनथल बनल तमालक तरुसँ तोरे कच सन कारी ॥
रातुक बेरुक ई गिरिधारी ।][1]

एहि श्लोक-खंडमे जयदेवक काव्य-प्रतिभासँ स्वतः उद्‌भूत शब्द-चमत्कार ओ चित्र-चमत्कारक प्रति रवीन्द्रनाथ टैगोर, बालेन्द्रनाथ टैगोर एवं भारतक अन्यान्य महान साहित्यिक कलाकार सभ केओ पर्याप्त अनुरक्त भेलाह अछि। ई अपन समस्त अन्तर्जात काव्य-माधुर्य्य तथा गरिमासँ अपनाकेँ पूर्ण श्लोक तथा सम्पूर्ण काव्यसँ सहजभावेँ पृथक सिद्ध करैत अछि।

---

१. कविचूड़ामणि पं० काशीकांत मिश्र 'मधुप' कृत गीत-गोविन्दक मैथिली अनुवाद (अप्रकाशित)सँ साभार गृहीत। —अनुवादक।

६. जयदेव-रचनावलीकेँ पूर्ण करैत सदुक्तिकर्णामृतमे छब्बीसटा श्लोक गीत-गोविन्द सहित : जयदेव, विभिन्न शैलीक कवि ।

जयदेवक अप्रतिम कृति **गीत-गोविन्दक** अध्ययन प्रारम्भ करबासँ पूर्व, **सदुक्तिकर्णामृतमे** उद्धृत जयदेवक छब्बीसटा श्लोक पर विचार करब उपयोगी हैत । ई सभ श्लोक जयदेवक काव्यप्रवृत्ति ओ सिद्धिक व्यापक क्षेत्रक परिचायक अछि जे केवल प्रेम ओ शृंगार धरि सीमित नहि छल । वैष्णवमत ओ भक्तिक अन्तर्धाराक अछैतहु, **गीत-गोविन्दमे** जाहि रसक प्रधानता अछि ओ अछि शृंगार, शान्त नहि । **सदुक्तिकर्णामृतक** निम्नोद्धृत श्लोक सभ एहि कथनक प्रसंगानुकूल हैत जे शृंगाररसक मान्य कलाकार जयदेव आनो रसमे ओहिना सिद्धहस्त छलाह । आ' ई कविक रूपमे हुनक सर्वतोमुखी प्रतिभाक प्रमाण थिक जे ओ श्रेष्ठ संस्कृत काव्य-परम्परामे विभिन्न रसक निर्वाह कऽ सकैत छलाह। हुनक संगीत सातटा तारक वा ओहूसँ बेशीक वीणा बजौलक, केवल एकटा तारक धनुष नहि ।

सदुक्तिकर्णामृतमे उद्धृत एहि सभ श्लोक (जे श्लोक सभ सामान्यतः ज्ञात नहि अछि) केँ आन सामग्रीक अभावमे, समस्त **गीत-गोविन्दक** संग, जयदेवक साहित्यिक रचनाक सम्पूर्ण संग्रहक रूपमे मानल जा सकैत अछि। आ' एहि तरहेँ जयदेवक अध्ययनमे एकर प्रासगिकता छैक । ई अवश्य जे हुनक **गीत-गोविन्दक** अनेको मुद्रित संस्करण ओ हस्तलेख उपलब्ध अछि। **सदुक्तिकर्णामृतक** निम्नोद्धृत श्लोक सभक अनुवाद नहि देल गेल अछि, ई एहि लेल जे, जे केओ संस्कृत पढ़ि सकैत छथि हुनका सभकेँ एकर सारांश बुझबामे भाङठ नहि हैतन्हि । मुदा खास विन्दु सभ पर टिप्पणी दऽ देल गेल अछि ।

सदुक्तिकर्णामृतमे जयदेव रचित कहल गेल छब्बीस टा श्लोक :

(१) **सदुक्तिकर्णामृत**, १-४-४ : महादेवः (शिवः)

भूति-व्याजेन भूमीममरपुर-सरित्कैतवादम्बु बिभ्र-
ल्लालाटाक्षिच्छलेन ज्वलनमहिपति-श्वास-लक्ष्यं समीरम् ।
विस्तीर्णाघोर-वक्त्रोदर-कुहर-निभेनाम्बरं पञ्चभूतं
विश्वं शश्वद् वितन्वन् वितरतु भवतः सम्पदं चन्द्रमौलिः ॥

(संस्कृत नाटक ओ सुभाषित-साहित्यक महत् शैलीक सर्वथा अनुरूप ई शिवक एक गोट स्तुतिपरक आह्वान थिक ।)

(२) **सदुक्तिकर्णामृत**, १-५०-३० :

कल्कि, विष्णुक दशम एवं अन्तिम अवतार :

कल्की कल्कं हरतु जगतः स्फूर्जदूर्जस्वितेजा
वेदोच्छेद-स्फुरित-दुरित-ध्वंसने धूमकेतुः ।
येनोत्क्षिप्य क्षणमसिलतां धूमवत्कल्मषेच्छान्
म्लेच्छान् हत्वा दलितकलिनाकारि सत्यावतारः ॥

(इहो विष्णुक कल्कि अवतारक स्तुतिपरक प्रशस्ति थिक । कल्कि अर्थात् दुष्ट जे अधर्म ओ पाप आनैत अछि तकर संहारक ।)

(३) १-५९-४ : कृष्णभुजः

जयश्रीविन्यस्तैर्महित इव मन्दारकुसुमैः
[= गीत-गोविन्द, ११-३४] ॥

(४) १-६०-५ : गोवर्द्धनोद्धारः

मुग्धे, नाथ, किमात्थ, तन्वि शिखरिप्राग्भारभुग्नो भुजः
साहाय्यं प्रिय किं भजामि, सुभगे दोर्वल्लिमायासय ।
इत्युल्लासित-बाहु-मूल-विचलच्चेलाञ्चल-व्यक्तयो
राधायाः कुचयोर्जयन्ति चलिताः कंसद्विषो दृष्टयः ॥

कृष्ण द्वारा ऊर्ध्व करतल पर गोवर्द्धन धारणक शृंगारिक विवक्षायुक्त एकटा श्लोक वा घटना । ई श्लोक सदुक्तिकर्णामृतमे उद्धृत समान शैलीक एकटा अन्य श्लोकमे प्रतिध्वनित अछि जकरा उमापति-धर रचित कहल गेल अछि । उमापति-धर जयदेवक समसामयिकमे सँ छलाह । उमापति-धरक एहि श्लोकक संख्या, सदुक्तिकर्णामृतमे १-५५-३ अछि आ' ई सोलहम शताब्दीक रूपगोस्वामीक संकलन 'पद्यावली'मे सेहो अछि जतय एकर

संख्या २५९ अछि। विषयकेँ हरिक्रीड़ा कहल गेल अछि। एहि दुनू श्लोकमे जे समानता अछि से ई जे चारिम पंक्तिक अन्तमे समस्यापूर्त्तिक ध्रुवा सदृश समान शब्दावली अछि आ' से ध्यान देवाक विषय थिक। ई ओहिना अछि जेना जयदेव, लक्ष्मण सेन एवं केशव सेनक एही शार्दूलविक्रीड़ित छन्दमे रचित पूर्वोद्धृत किछु अन्य श्लोकक चतुर्थ पंक्तिक पूर्वार्द्धमे अछि।

भ्रूवल्लीचलनैः कयापि नयनोन्मेषैः कयापि स्मित-
ज्योत्स्नाविच्छुरितैः कयापि निभृतं संभावितस्याध्वनि।
गर्वोद्भेदकृतावहेलविनयश्रीभाजि राधानने
सातङ्कानुनयं जयन्ति पतिताः कंसद्विषो दृष्टयः॥

(५) १-८५-५ : बहुरूपकश्चन्द्रः

क्रीडा-कर्पूर-दीपस्त्रिदश-मृगदृशां काम-साम्राज्य-लक्ष्मी-
प्रोत्क्षिप्तैकातपत्रं श्रम-शमन-चलच्चामरं कामिनीनाम्।
कस्तूरी-पङ्क-मुद्राङ्कित-मदन-वधू-मुग्ध-गण्डोपधानं
द्वीपं व्योमाम्बुराशेः स्फुरति सुरपुरी-केलिहंसः सुधांशुः॥

(चन्द्रमाक बृहत् वर्णन।

(६) २-३७-४ : वासकसज्जा

अङ्गे त्वाभरणं तनोति बहुशः ··· [=गीत-गोविन्द ५-११॥

(७) २-७१-४ : अधरः

विभाति बिम्बाधरवल्लिरस्याः स्मरस्य बन्धूकधनुर्लतेव।
विनापि बाणेन गुणेन येयं यूनां मनांसि प्रसभं भिनत्ति॥
(रूपवतीक अधर)

(८) २-७७-५ : रोमावली

हरति रतिपतेर्नितम्ब-विम्ब-
स्तनतट-चंक्रम-सङ्क्रमस्य लक्ष्मीम्।
त्रिवलि-भव-तरङ्ग-निम्न-नाभी-
ह्रद-पदवीमधिरोमराजिरस्याः॥

(९) २-१३२-४ : रतारम्भः

उन्मीलत्पुलकांकुरेण निविडाश्लेषे निमेषेण च
[=गीत-गोविन्द, १२ १०]॥

(१०) २-१३४-४ : विपरीतरतम्

माराङ्के रतिकेलि.....

[=गीत-गोविन्द, १२-१२] ॥

(११) २-१३७-५ उषसि प्रियादर्शनम्

अस्याः (तस्याः) पाटलपाणिजाङ्कितमुरो····

[=गीत-गोविन्द, १२-४] ॥

(उषाकालमे प्रियतमाक रूप-सौन्दर्य)

(१२) २-१७०-५ : शरत्खञ्जनः

मधुर - मधुरं कूजन्नग्रे पतन्मुहुरुत्पत-
न्नविरल-चलत्पुच्छः स्वेच्छं विचुम्ब्य चिरं प्रियाम् ।
इह हि शरदि क्षीबः पक्षौ विधूय मिलन्मुदा
मदयति रहः कुञ्जे मञ्जुस्थलीमधि खञ्जनः ॥

(पुष्पकुंजमे कामुक खञ्जन पक्षी)

(१३) ३-५-४ : धर्मः

यूपैरुत्कट-कण्टकैरिव मख-प्रोद्भूत-धूमोद्गमै-
रप्यन्धंकरणौषधैरिव पदे नेत्रे च जातव्यथैः ।
यस्मिन्धर्मपरे प्रशासति तपःसंभेदिनीं मेदिनी-
मास्तामाक्रमितुं विलोकितुमपि व्यक्तं न शक्तः कलिः ॥

(धर्माचरणमे रत शासक)

(१४) ३-९-४ : करः

तेषामल्पतरः स कल्प-विटपी तेषां न चिन्तामणि-
श्चिन्तामप्युपयाति काम-सुरभिस्तेषां न कामास्पदम्
दीनोद्धार-धुरीण-पुण्य-चरितो येषां प्रसन्नो मना-
क्पाणिस्ते धरणीन्द्र सुन्दर यशःसंरक्षिणो दक्षिणः ॥

(धर्मात्मा राजाक भुजा)

(१५) ३-९-५ : करः

देव त्वत्कर-पल्लवो विजयतामश्रान्त-विश्राणन-
क्रीड़ा-स्कन्दित-कल्पवृक्ष-विभवः कीर्त्ति-प्रसूनोज्ज्वलः ।

यत्योत्सर्ग-जलच्छलेन गलिताः स्यन्दान-दानोदक-
स्रोतोभिर्विदुषां ललाट-लिखिता दैन्याक्षर-श्रेणयः ॥
(उदार वा दानशील राजाक भुजा)

(१६) ३-१०-४ : चरणः

लक्ष्मी-विभ्रम-सद्मपद्मसुभगं के नाम नोर्वीभुजो
देव त्वच्चरणं व्रजन्ति शरणं श्रीरक्षणाकांक्षिणः ।
छायायामनुगम्य सम्यगभयास्त्वद्वीर्य-सूर्यातप-
व्याप्तामप्यवनीमटन्ति रिपवस्त्यक्तातपत्राः सुखम् ॥
(पराक्रमी राजाक चरण)

(१७) ३-११-५ : प्रियाख्यानम्

लक्ष्मी-केलि-भुजङ्ग जङ्गम-हरे संकल्प-कल्पद्रुम
श्रेयःसाधक-सङ्ग सङ्गर-कला-गाङ्गेय वङ्गप्रिय ।
गौडेन्द्र प्रतिराज-नायक सभालंकार कर्णार्पित-
प्रत्यर्थि-क्षितिपाल पालक सतां दृष्टोऽसि तुष्टा वयम् ॥
(वंग ओ गौड़क महान राजाक प्रति प्रशस्ति)

(१८) ३-१५-५ : देशाश्रयः

त्वं चोलोत्कलोललीनां कलयसि कुरुषे कर्षणं कुन्तलानां
त्वं काञ्चीन्यञ्चनाय प्रभवसि रभासादङ्गसङ्गं करोषि ।
इत्थं राजेन्द्र वन्दिस्तुतिभिरुपहितोत्कम्पमेवाद्य दीर्घं
नारीणामप्यरीणां हृदयमुदयते त्वत्पदाराधनाय ॥

(चोल, कुन्तल, काञ्ची तथा अंग पर विजय प्राप्त कैनिहार महान विजेताक प्रशस्ति ।)

(१९) ३-१९-५ : विक्रमः

शिक्षन्ते चाटुवादान्विदधति यवसानानने काननेषु
भ्राम्यन्ति ज्याकिणाङ्कं विदधति शिविरं कुर्वते पर्वतेषु ।

अभ्यस्यन्ति प्रयाणं त्वयि चलति चमूचक्रविक्रान्तिभाजि
प्राणत्राणाय देव त्वदरिनृपतयश्चक्रिरे कार्मणानि ॥
(अपन वीरोचित गुणसँ महान योद्धा राजा)

(२०) ३-२०-५ . पौरुषम्

भीष्मः क्लीबकतां दधार समिति द्रोणेन मुक्तं धनु-
र्मिथ्या धर्मसुतेन जल्पितमभूद् दुर्योधनो दुर्मदः ।
छिद्रेष्वेव धनंजयस्य विजयः कर्णः प्रमादी ततः
श्रीमन्नस्ति न भारतेऽपि भवतो यः पौरुषैर्वर्धते ॥
(वीरोचित गुण : एकटा वीर राजा जे महाभारतक वीर सभसँ श्रेष्ठ छथि)

(२१) ३-२३-५ : तेजः

एकं धाम शमीषु लीनमपरं सूर्योपलज्योतिषां
व्याजादद्रिषु गूढ़मन्यदुदधौ संगुप्तमौर्वायते ।
त्वत्तोजस्तपनांशु-मांसल-समुत्तापेन दुर्गं भया
द्वार्क्षं पार्वतमौदकं यदि ययुस्तेजांसि किं पार्थिवाः ॥
(राजाक प्रज्वलित प्रताप, जे प्रकृति ओ पृथ्वी द्वारा प्रदर्शित कोनो वस्तुसँ उत्कृष्ट अछि ।)

(२२) ३-२९-५ : आश्चर्यखड्गः

श्रीखण्डमूर्त्तिः सरलाङ्गयष्टि-
र्मकन्दमामूलमहो वहन्ती ।
श्रीमन्भवत्खड्ग-तमाल-वल्ली
चित्रं रणे श्रीफलमातनोति ॥
(राजाक आश्चर्यजनक तरुआरि)

(२३) ३-३४-३ : तूर्यध्वनिः

गुञ्जत्कौञ्चनिकुञ्ज-कुञ्जरघटाविस्तीर्ण-कर्णज्वराः
प्राक् प्रत्यग्धरणीन्द्र-कन्दर-जरत्पारीन्द्र-निद्रा-द्रुहः
लङ्काङ्क-त्रिककुत्प्रतिध्वनि-घनाः पर्यन्त-यात्रा-जयै
यस्य भ्रेमुरमन्द-मन्दर-रवैराशारुधो घोषणाः ॥
(विजय प्राप्त करैत राजाक तूर्यक निनाद)

(२४) ३-३४-४ : तूर्यध्वनिः

यस्याविर्भूत-भीति-प्रतिभट-पृतना-गर्भिणी - भ्रूण-भार-
भ्रंशभ्रेशामिभूत्यै प्लवनमिव भजन्नम्भसाम्भोनिधीनाम् ।
संभारं संभ्रमस्य त्रिभुवनमभितो भूभृतां बिभ्रदुच्चैः
संरम्भोज्जृम्भणाय प्रतिरणमभवद् भूरि भेरी-निनादः ॥
(राजाक युद्धक तुरही—'भ'क आवृत्ति ध्यातव्य)

(२५) ३-३४-५ : तूर्यध्वनिः

विघट्टयन्नेष हठादकुण्ठ-
वैकुण्ठ-कण्ठीरव-कण्ठ - गर्जाम् ।
भयंकरो दिक्करिणां रणाग्रे
भेरी-रवो भैरव-दुःश्रवस्ते ॥

(युद्धमे घोष करैत राजाक सैन्यक तूर्य)

(२६) ३-३८-३ : युद्धम्

शत्रूणां काल-रात्रौ समिति समुदिते बाण-वर्षान्धकारे
प्राग्भारे खड्ग-धारां सरितमिव समुत्तीर्य मग्नारिवंशाम् ।
अन्योन्याघात-मत्त - द्विरद-घनघटा-दन्त-विद्युच्छटाभिः
पश्यन्तीयं समन्तादभिसरति मुदा सांयुगीनं जयश्रीः ॥
(युद्ध-वर्णन)

(२७) ३-३९-४ : युद्धस्थली

निर्यन्न राच-धारा-चय-खचित-पतन्मत्त-मातङ्ग-जातं
जातं यस्यारि-सेना-रुधिर-जलनिधावन्तरीपभ्रमाय ।
सुप्ता यस्मिन् रतान्ते सह च सहचरैर्नालवन्नागनासा-
रन्ध्रद्वन्द्वैकपात्रे रुधिर मधु-रसं प्रेत-कान्ताः पिबन्ति ॥
(युद्धक परिणाम—युद्धक दानव सभक वीभत्स चित्र)

(२८) ३-४०-५ : दिग्विजयः

एकः संग्राम-रिङ्गत्तुरग-खुर-रजो-राजिभिर्नष्टदृष्टि-
र्दिग्यात्रा - जैत्र - मत्त - द्विरद -भर-नमद्भूमि-भग्नस्तथान्यः ।
वीराः के नाम तस्मात्त्रिजगति न ययुः क्षीणतां काण-कुब्ज-
न्यायादेतेन मुक्तावभयमभजतां वासवो वासुकिश्च ॥
(वीर राजाक विजय-प्रयाण)

(२९) ३-५२-५ : प्रशस्तकीर्त्तिः

मलिनयति वैरिवदनं स्वजनं रञ्जयति धवलयति धात्रीम् ।
अपि कुमुद-विशद मूर्तिर्यत्कीर्तिश्चित्रमाचरति ॥
(शासकक विजयक कीर्त्ति)

(३०) ५-१६-४ : दिशः

अस्तु स्वस्त्ययनाय दिग्धनपतेः कैलास-शैलाश्रय-
श्रीकण्ठाभरणेन्दु-विभ्रम-दिवा-नक्तं-भ्रमत्कौमुदी ।
यत्रालं नल-कूबराभिसरणारम्भाय रम्भास्फुर-
त्पाण्डिम्नेव तनोस्तनोति विरहव्यग्रापि वेशग्रहम् ॥
(दशो दिशा द्वारा वीर राजाक यशोगान)

(३१) ५-१८-२ : वीरः

धात्रीमेकातपत्रां समिति कृतवता चण्ड-दोर्दण्ड-दर्पा-
दास्थाने पाद-नम्र-प्रतिसट-मुकुटादर्श-विम्बोदरेषु ।
उत्क्षिप्तच्छत्रचिह्नं प्रतिफलितमपि स्वं वपुर्वीक्ष्य किंचित्
सासूयं येन दृष्टाः क्षितितल-विलसन्मौलयो भूमिपालाः ॥
(पराजित शासकगण द्वारा विजेताक अभिनन्दन)

सदुक्तिकर्णामृतमे देल गेल उपर्युक्त श्लोक सभसँ ई सुस्पष्ट अछि जे जयदेव केवल शृंगाररसक कवि नहि छलाह ! संस्कृत काव्यशास्त्रमे विवेचित अन्यान्य रस यथा **वीर**, **रौद्र**, **अद्भुत** ओ **शान्त** सेहो जयदेव द्वारा समान सौन्दर्य ओ शक्तिक संग प्रयुक्त भेल अछि। एहि संकलनमे जाहि एकतीसटा श्लोककेँ जयदेव-रचित कहल गेल अछि ताहिमे सँ पाँचटा **गीत-गोविन्द**सँ लेल गेल अछि। अन्य जे छब्बीसटा श्लोक उद्धृत कैल गेल अछि तकर बोधगम्यतासँ केओ ई सोचबाक लेल प्रवृत्त हैत जे जयदेव कमसँ कम दूटा वा तीनटा आनो ग्रन्थ लिखने हैताह। एहिमे सँ एकटा लगैत अछि जे **गीत-गोविन्द** जकाँ कृष्णकथाक छल (उपरि उद्धृत श्लोक संख्या ६, ७, ८, १२ अपन विषय-वस्तुक आधार पर कृष्णविषयक अछि); तथा दोसर ग्रन्थ (वा ग्रन्थ सभ) प्रायः राजा लक्ष्मण सेनक प्रताप पर रहल हैत। लक्ष्मण सेन सुप्रसिद्ध योद्धा छलाह आ' उपरि-उद्धृत, संख्या १३सँ ३१ धरिक श्लोकमे लक्ष्मण सेनक प्रशस्ति अछि जकर विषय वीरत्व अछि। ई सभ

दोसर (दोसर एवं/वा तेसर) कृतिक अंशीभूत थिक। प्रत्यक्षतः लक्ष्मण सेन असाधारण सैनिक छलाह आ' कहल गेल अछि जे ओ युद्ध-अभियानमे दक्षिण भारत गेल छलाह। एकर सूचना कवि धोयीक **पवनदूतसँ** भेटैत अछि। पवनदूत राजा लक्ष्मण सेनक दक्षिण भारतक अभियानसँ सम्बन्धित अछि। ऐतिहासिक दृष्टिएँ ई कतेक सत्य अछि से नहि ज्ञात। भऽ सकैत अछि जे ई राज-प्रशस्तिकारक कवि-कल्पना हो, जे उड़ीसा पर आक्रमणकेँ (यद्यपि एकरहु ऐतिहासिक प्रमाण नहि अछि) तमिल देशक विजयाभियानमे अतिरंजित कऽ देने होथि। ई सर्वथा सम्भव जे जयदेव सेहो, लक्ष्मण सेनक एकगोट सभाकविक रूपमे, अपन संरक्षक राजा लक्ष्मण सेनक सामरिक कीर्त्तिकेँ प्रचारित करबाक लेल, धोयी सदृश, मुदा किंचित् भिन्न शैलीमे एकटा पैघ रचना कैलन्हि। एकर अतिरिक्त, एहि संकलनक अन्य श्लोक (उपरि उद्धृत संख्या १, ४, ५ आ' सम्भवतः संख्या १२, १३ सेहो) जयदेवक प्रकीर्ण श्लोकमे सँ भऽ सकैत अछि जे कोनो नियमित पुस्तकक नहि हो। यदि कविक रूपमे जयदेवक स्थिति राजसभामे आ' संगहि सम्भवतः संस्कृत पाठकक सामान्य समूहमे सुप्रतिष्ठित नहि रहितन्हि त श्रीधर दास जयदेवक एतेक राश श्लोककेँ उद्धृत नहि करितथि। लक्ष्मण सेन, जे समानतः वंगालसँ सम्बद्ध आनो महान कविलोकनिक संरक्षक छलाह, जनिका-लोकनिकेँ सेहो श्रीधर दास उद्धृत कैने छथि, तनिक राजसभा ओ व्यक्तित्वसँ ई निकट सम्बन्ध वंगालसँ तथा वंगालक राजधानी नवद्वीपसँ जयदेवक सम्पर्कक समर्थन करैत अछि।

□

७. जयदेवक कवि-सुलभ दिग्विजय—अखिल भारत ओ विश्वमे ।

लगैत अछि जे जयदेवक ख्याति अति शीघ्र सम्पूर्ण भारतमे पसरि गेल । हुनक गीत-गोविन्द द्वारा ओहि अभावक पूर्त्ति भेल जकर अनुभव संस्कृत तथा नवोदीयमान भाषाक साहित्यकारलोकनि कऽ रहल छलाह । ई पुस्तक श्रेष्य संस्कृतक संग अपभ्रंश ओ नव्य-भारतीय-आर्यभाषाक आत्मिक मिलनकेँ उप उपस्थित कैलक । गीत-गोविन्दमे पौराणिक कथा ओ प्रेमाख्यानकेँ आकर्षक रूपमे प्रस्तुत कैल गेल, जकर उद्देश्य छल भक्ति-आन्दोलन द्वारा जे हिन्दू पुनरुत्थान भऽ रहल छल, ताहिमे योगदान करब । एकर रचनाक सय वर्षक अभ्यन्तरहि एहिमे सँ एकटा श्लोककेँ सुदूर गुजरात स्थित पाटन (अनहिलवाद) मे संवत् १३४८ = १२९२ ई० क एकगोट शिलालेखमे उद्धृत पबैत छी (द्रष्टव्य-मनमोहन चक्रवर्तीक पूर्व उल्लिखित लेख) । गुजरात ओ राजस्थानमे एकर लोकप्रियता ओहिना बड़ बेशी भऽ गेल छल जेना बंगाल ओ उड़ीसा मे, पंजाबक पहाड़ी इलाकामे तथा उत्तर-भारतीय प्रान्तमे । प्रारम्भहिसँ बंगला, उड़िया, हिन्दी ओ गुजराती काव्यमे एकर पंक्ति ओ अंश सभ उद्धृत भेल अछि तथा भावक अनुकरण कैल गेल अछि । मध्य-बंगलाक प्राचीनतम कवि बडु चण्डीदास अपन **श्रीकृष्णकीर्त्तनमे**, जे उपलब्ध अछि, गीत-गोविन्दसँ दूगोट गीतक अनुवाद कैने छथि । एहि काव्यमे अन्यत्र **गीत-गोविन्दक** बहुत राश पंक्ति जयदेवक स्मरण दियाबैत अछि । एही तरहेँ प्रारम्भिक गुजराती काव्य 'वसन्त-विलास'क (प्रो० कान्तिलाल बी० व्यासक अनुसार १४५० मे रचित आ' 'मुनि श्री-जिनविजयजीक मते १३५० मे) श्लोक सभ (यथा ७,१९,३२,३६,६९) **गीत-गोविन्दक** अनुगुंजन थिक । डा० हरेकृष्ण मुखर्जी, साहित्य-रत्न, **गीत-गोविन्दक** अपन व्यापक अध्ययनमे, एकर प्रायः चालीसटा भाष्यक सूची देलन्हि अछि (बंगला ग्रन्थ, चतुर्थ संस्करण, बंगला सन् १३७२, अग्रहायण) । एहिमे सभसँ पहिल अछि मेवाड़क राणा कुम्भा

(१४३३-१४६८) रचित **रसिकप्रिया**। ई अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण ओ विशाल कृति अछि। एहि तरहेँ **गीत-गोविन्द** संस्कृतक सर्वाधिक आलोचित ग्रन्थमे सँ अछि। ई आलोचकलोकनि दक्षिण भारत सहित भारतक प्रत्येक भागक छथि। संस्कृतमे विभिन्न कवि द्वारा कमसँ कम पन्द्रहटा काव्यक रचना कैल गेल अछि जे **गीत-गोविन्द**क अनुकरण कय उक्त ग्रन्थक प्रति सम्मान प्रकट कऽ रहल अछि। एकर अतिरिक्त किछु रचना भाषामे अछि। मध्य-बंगला ओ मध्य-उड़ियामे **गीत-गोविन्द**क अनेक अनुवाद वा रूपान्तर भेल। डा० हरेकृष्ण मुखर्जी जाहि तीनगोट बंगला अनुवादक उल्लेख विशेष रूपसँ कैलन्हि अछि ओ अछि रसमय दास, जगत सिंह तथा रघुनाथ दासक। पुरीक जगन्नाथ मन्दिरक एकगोट उड़िया अभिलेखसँ, जकर समय १४९९ ई० अछि आ' जे राजा प्रतापरुद्रक आज्ञासँ उत्कीर्ण कैल गेल छल, ज्ञात होइत अछि जे उक्त तिथिसँ मन्दिरक देवदासीलोकनिकेँ केवल **गीत-गोविन्द**क गीत ओ श्लोकक गान करबाक आदेश देल गेल छलन्हि, आन कोनो ग्रन्थसँ नहि (द्रष्टव्य : मनमोहन चक्रवर्ती, जर्नल आफ एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, जिल्द LXII, १८९३, पृष्ठ ९६-९७)। जकरा मध्यभारतक अपभ्रंश ओ प्रारंभिक हिन्दीक चित्रांकित कला कहबैक (तथा-कथित प्राचीन गुजराती ओ प्रारंभिक राजपूत-कला) ताहिमे तथा राजस्थान, बुन्देलखण्ड, बसोहली, चम्बा एवं काँगड़ाक 'परवर्ती हिन्दी' कलामे तथा एकर संगहि भारतक अन्य भाग – बंगाल, आसाम, उड़ीसा, तैलंगक स्थानीय कलामे एकर पर्याप्त महत्त्वपूर्ण स्थान रहल अछि।

यूरोपीय विद्वान द्वारा संस्कृतक अनुसन्धान ओ अध्ययन भेलासँ, जयदेवक काव्य-प्रतिभाक अविलम्ब मूल्यांकन भेल। सर विलियम जोन्स (१७४६-१७९४) द्वारा अंग्रेजीमे आ तत्पश्चात् फ्रेडरिक रूसेकर्ट (१७८८-१८६६) द्वारा जर्मनमे हुनक महान काव्यक अनुवाद कैल गेल। एकर अनुसरण करैत अन्य अनुवादक फ्रेंच, अंग्रेजी, जर्मन ओ आन-आन यूरोपीय भाषामे एकर अनुवाद कैलन्हि। आब तँ गीत-गोविन्दकेँ विश्व-साहित्यमे सेहो एकगोट सर्वोत्कृष्ट कृतिक रूपमे स्वीकार कैल गेल अछि।

□

८. गीत-गोविन्द : अपन गीतसँ अन्त्य-मध्य-भारतीय-आर्य वा प्रत्न नव्य-भारतीय-आर्य साहित्यक प्रतिरूप ।

गीत-गोविन्द श्रेण्य संस्कृत कविता तथा **अपभ्रंश** ओ प्रारंभिक **भाषा** कविताक आत्माकेँ संयुक्त करैत अछि। एकर बारहटा सर्गमे चोबीसटा गीत वा यदि दोसर नाम कही त चौबीसटा पद अछि, जे सम्पूर्ण काव्यमे विकीर्ण अछि। काव्यक गठन जेना वर्णनात्मक अंशकेँ रूपायित करैत श्लोकमे अछि, अपन रीति ओ छन्द, भाव ओ शब्दावलीमे श्रेण्य संस्कृतक रूढ़िनिष्ठ शैलीमे अछि, मुदा पद सभ अपभ्रंश एवं प्रारंभिक भाषाक परिवेष्टनमे जीवन्त अछि। एकर छन्द अपभ्रंश तथा प्रारंभिक मात्रावृत्त अछि। एकाधिक विद्वान ई सन्देह प्रकट कैलन्हि अछि जे गीत सभ मूलतः अपभ्रंश वा प्राचीन भाषा (एहि सन्दर्भमे प्राचीन बंगला) मे लिखल गेल (द्रष्टव्यः पिशेल अपन Grammatic der Prakrit sprachen मे Lassen क निर्देश करैत ३२ : विजयचन्द्र मजुमदार गीत-गोविन्दक अपन बंगला अनुवादक भूमिकामे) । अपभ्रंश वा प्राचीन बंगलाक ई सभ श्लोक अत्यन्त लोकप्रियता प्राप्त कैलक अतः ई सर्वथा संगत जे जयदेव एकरा सभकेँ स्थायी ओ अखिल भारतीय रूप देवाक लेल संस्कृतमे रूपान्तरित करबाक लेल प्रेरित भेलाह। अवश्ये ई अनुमान थिक मुदा चारिटा तथ्य पर आधारित अछि जे निम्नलिखित अछि :

(१) लय, तुक ओ तालक दृष्टिएँ चौबीसो पदवा गीतमे **अपभ्रंश** एवं प्राचीन **भाषा**क श्रेण्य संस्कृतक विपरीत जे लक्षण सभ अछि से सुस्पष्ट अछि। विस्तार सँ एकर विवेचन करव आवश्यक नहि कारण जे ओ देखलेसँ बुझवा जोकर भऽ जाइत अछि।

(२) **अपभ्रंश** (तथा **अवहट्ठ** अर्थात **अपभ्रष्ट**) तथा प्राचीन भाषा-कविताक विपुल राशि, जे प्राकृतपैंगल (१५म शताब्दीक शेषकाल) तथा मान-सोल्लास वा अभिलषितार्थ-चिन्तामणि (१२ म शताब्दीक पूर्वार्द्ध)मे प्राप्त अछि,

जयदेवक गीत सभक स्मरण दियावैत अछि। (एहि सन्दर्भमे द्रष्टव्य : हमर ओरिजिन एण्ड डिभलौपमेण्ट आफ बंगाली लैंग्वेज, जिल्द-१, प्रथम संस्करण, कलकत्ता १९२६ : पुनर्मुद्रण १९७०, जार्ज एलन एण्ड अनविन लिमिटेड, पृष्ठ १२३-२७, तथा जिल्द-३, प्रथम संस्करण १९७२, जार्ज एलन एण्ड अनविन लिमिटेड, पृष्ठ २९-३१। डा० सुकुमार सेन कृत पाँच जिल्दमे बगलामे रचित बंगला साहित्यक इतिहास, प्रथम जिल्द सेहो द्रष्टव्य।)

(३) गीत सभक कतिपय पंक्ति संस्कृतक अपेक्षा अपभ्रंश वा प्राचीन भाषाक रूपमे बेशी बढ़िया जकाँ पढ़ल जाइत अछि आ' पंक्तिक विराम-योजनामे सटीक बैसि जाइत अछि जकरा प्राचीन बंगलासँ बड़ बेशी समानता छैक (यथा सर्ग-२क पाँचम गीतक ध्रुवा "स्मरति मनो मम कृतपरिहासम्" कें यदि अपभ्रंशमे रूपान्तरित कऽ देल जाय—"सुमरइ मण मम किय-परिहासं" त चरणमे औरहु बढ़िया मात्रा-निर्देश प्राप्त होइत अछि; "श्रीजयदेव-कवेरिदं कुरुते मुदं मंगलम् उज्ज्वल-गीति" पंक्तिमे प्रथम ओ द्वितीय चरणमे एक-एक मात्रा बेशी अछि जकर परिष्कार एहि दुनू चरणकें अपभ्रंशक शैलीमे "श्री-जयदेव-केवेरिदं कुरुते मुदं" क रूपमे पढ़लासँ कैल जा सकैत अछि। डा० सुकुमार सेन एकर संकेत कैने छथि। तथापि ओ जयदेवक एहि गीत सभकें मूलतः संस्कृत छोड़ि आन भाषाक मानबाक पक्षमे नहि छथि।) एहि गीन सभक छन्दक प्रतिरूप बँगला एवं अन्य पूर्वीय भाषाक भाषा-छन्दमे प्राप्त होइत अछि।

(४) अन्ततः समाख्यानकाव्य रहितहुँ गीत-गोविन्दमे नाटकीय तत्व अछि। राधा ओ कृष्णक गोपी सखी द्वारा, वा स्वयं दिव्य प्रेमी प्रेमिका द्वारा गाओल गेल गीत सभ संवाद जकाँ लगैत अछि। ई निर्विवाद जे एक दिश एकर थोड़-बहुत हाथ लोकप्रिय यात्रा वा बंगालक प्राचीन ढंगक गीत-नाट्यक विकासमे रहल, जे बहुत संभव जे अंशतः एक प्रकारक आद्य भाषा आख्यान-सह-कथोप-कथन-सह-गीतक आदर्श पर छलैक, जकर पृष्ठभूमि वाद्य-संगीत छलैक; आ' दोसर दिश ई ओहि परम्परासँ सम्बद्ध बुझि पड़ैत अछि जे मिथिला वा उत्तर बिहारमे विकसित होइत रहल, जाहिमे हमरा सभकें एहन नाटक भेटैत अछि जाहिमे कथोपकथन तँ संस्कृत वा प्राकृतमे गद्यमे छैक ठीक ओहिना जेना संस्कृत नाटकमे, मुदा पद वा गीत सभ मैथिली भाषामे अछि। एहि प्रकारक बहुत राश नाटकक सूचना सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन अपन मैथिली ग्रामर एण्ड क्रेस्टोमैथी (कलकत्ता, एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, द्वितीय संस्करण,

१९०९, पृष्ठ xiv, xv) मे देलन्हि अछि। एहि प्रकारक एकटा नाटकके स्वयं ग्रियर्सन १९१७ ई०क जर्नल आफ विहार एण्ड ओड़िसा रिसर्च सोसाइटी, पटनामे प्रकाशित करौलन्हि (१८म शताब्दीक प्रथम पादक उमापति उपाध्याय रचित पारिजातहरण)। ई परम्परा नेपाल धरि प्रचलित भेल। पाटन, भक्तपुर वा भातगाँव, कीर्त्तिपुर वा काष्ठमण्डप (काठमाण्डो) राज्यक नेवारी राजसभामे एहि परम्पराके किछु अंशमे परिवर्तित कैल गेल, जाहिमे कथोपकथन भग्न बंगला वा मैथिलीमे तथा गीत सभ मैथिली वा कोशली (पूर्वी हिन्दी)मे आ' मंच-निर्देशन तिब्बती-बर्मी नेवारीमे छल। अनन्त बड़ु चण्डीदास रचित राधा-कृष्ण विषयक ओहि अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रारम्भिक बंगला काव्य अर्थात् कृष्णकीर्त्तनमे (जकर समय अनिश्चित अछि : किछु विद्वानक विचारे १४००ई० अछि तँ किछु विद्वान एकरा १६म शताब्दीक मानैत छथि) हमरा लोकनिके आख्यान ओ संवाद दुनू प्राप्त होइत अछि। एहि संवादमे दूटा वा तीनोटा पात्रके पद्यमे बजैत वा उत्तर दैत वा वाद-विवाद करैत पवैत छी।

एकटा मत, जकर उल्लेख पहिनहि कैल गेल अछि, ई अछि जे **गीत-गोविन्दमे** हमरा सभके भाषा-रचनाके विशेष मर्यादा देबाक निमित्त, भाषाक किछु रूपमे किंचित् परिवर्तन द्वारा, अपभ्रंश वा अवहट्ठ वा प्रारम्भिक जन-भाषासँ संस्कृतमे रूपान्तर प्राप्त होइत अछि। अपभ्रंश वा प्रारम्भिक भाषा सभके एहि प्रकारे संस्कृत रूप देबाक व्यवहार ओ प्रभाव प्रथम सहस्राब्दीक अन्तधरि पर्याप्त व्यापक छल। अतः ई सर्वथा बोधगम्य जे **गीत-गोविन्द** अपन पहिल प्रारूप वा मूलरूपमे अपन अपभ्रंश वा भाषागीत तथा अपन श्रेण्य-संस्कृत-गठनसँ, पूर्वी भारतमे विकसित साहित्यिक परम्पराक अनुरूप छल। आ' एकर बाद गीत सभके सुविधाजनक संस्कृतमे रूपान्तरित कऽ देब सहज छल, जाहिमे एक-दूटा पंक्तिमे अपभ्रंशक लक्षण ओहिना वर्तमान रहैत छल जेना ओहि पर मेटा कऽ लिखल गेल हो तथा और बेशी नियमित एवं और बेशी मधुर अपभ्रंशक लयके संस्कृतक सरल लयमे बदलि देल गेल हो।

□

९. सिख गुरु ग्रन्थ साहिब (आदि ग्रन्थ) मे जयदेवक कहल गेल दूटा भजन।

हमरालोकनिकेँ ई ज्ञात नहि अछि जे **गीत-गोविन्दक** संस्कृत श्लोक ओ गीत एहि दुनूकेँ छोड़ि जयदेव दोसरो कोनो पैघ काव्य लिखलन्हि। मुदा **सदुक्तिकर्णामृतक** पूर्व उल्लिखित स्फुट श्लोक सभ, जकर रचयिता हुनकहि कहल जाइत छन्हि, हुनका वीररसक कवि सेहो सिद्ध करैत अछि। प्रायः ओ एकाधिक पैघ काव्यक रचना कैने छलाह जाहिसँ ई श्लोक सभ लेल गेल। सम्भव थिक जे ओ एहि श्लोक सभक रचना अवसर-विशेषक लेल कैलन्हि। मुदा उत्तर-भारतक भक्ति-सम्प्रदाय-परंपरा मे एक वा अधिक जयदेवक परिचय भेटैत अछि आ' हुनका प्राचीन भाषा-गीतक रचनाक श्रेय देल जाइत अछि। प्रचलित धारणाक अनुसार ई भाषा-कविता सभ **गीत-गोविन्दक** रचयिता द्वारा रचल गेल जे हुनक देहावसानक पश्चात् दूसय वर्षक अभ्यन्तर, वैष्णवमतक सन्त ओ भक्तक प्रभावक्षेत्रमे अनुवादित कैल गेल।

जयदेव पंजाबमे सेहो भारतक महान सन्तक सूचीमे स्थान पौलन्हि। सिखक पाँचम गुरु अर्जुन, जे १६०५ क लगपासमे **आदिग्रन्थ** (गुरुग्रन्थ वा ग्रन्थ साहिब)क संकलन कैलन्हि, उक्त ग्रन्थमे दूगोट गीतक समावेश कैने छथि—एकटा जाहिमे अपभ्रंश ओ संस्कृतक मिश्रण अछि तथा दोसर प्राचीन भाषाक जकर अन्तिम पंक्तिमे जयदेवक भणिता अछि। एहि विषयमे पूर्ण निश्चय नहि अछि जे एहि दुनू गीतक रचयिता वा रचयितालोकनि तथा **गीत-गोविन्दक** रचयिता एकहि व्यक्ति छथि। सिख परम्परामे हिनका सभकेँ एकहि मानल गेल अछि। (सिख परम्परा जे मध्य-हिन्दी कृति **भक्तमालक** परम्परा थिक तकरा लेल द्रष्टव्य : एम० ए० मेकोलिफ, द सिख रिलिजन, आक्सफोर्ड १९०९, जिल्द ६)।

आदिग्रन्थ एक प्रकारक **मध्यकालीन ऋग्वेद** थिक। एहिमे भक्तिगीतक विपुल राशि, जाहि रूपमे ओ पंजाव एवं उत्तर भारतीय प्रान्तमे प्रचलित

छल, संगृहीत अछि। ई सभ बारहम शताब्दीसँ सोलहम शताब्दीक अवधिमे विभिन्न मध्यकालीन सन्त ओ भक्तक रचित अछि—जतवा धरि संकलयिता केँ बुझल छलन्हि वा नीक लगलन्हि। एहि सन्तलोकनिमे प्राचीनतम छलाह बंगालक जयदेव (१२मे शताब्दी), महाराष्ट्रक नामदेव (१३म शताब्दी) तथा पूर्वीय हिन्दुस्तानक रामानन्द (१४म शताब्दी)। सिख समुदायसँ बाहरक सन्त ओ भगत (भक्त सभ) मे जनिक संख्या एहि ग्रन्थमे सोलह अछि, कबीर (१५म शताब्दी) सभसँ नीक जकाँ निरूपित भेलाह अछि।

गुरु ग्रन्थ साहिबमे जयदेवक जे दूटा पद अछि से राग गुजरी ओ राग मारू मे। (एहि संकेतक लेल हम कृतज्ञतापूर्वक अपन अति आदरणीय मित्र ओ सहकर्मी, कलकत्ता विश्वविद्यालयक प्रोफेसर, सिख साहित्यक अधिकारी विद्वान, स्वर्गीय इन्दुभूषण बनर्जीक स्मरण करैत छिऐन्ह।)

पाठ एहि तरहेँ अछि—

२. श्री-जयदेव-जिउ-का पदा राग गुजरी

परमादि पुरुख मनोपिमम् सति आदि भाव-रतं।
परमाद्भूतं परक्रिति-परं जदि चिन्ति सरब-गतं॥

रहाऊ—

केवल राम-नाम मनोरमं वदि अमरित-तत मयं।
न दनोति जसत् मरणेना जनम-जराधि-मरण भयं॥
इछसि जमादि-पराभवं जसु स्वसति सुक्रिति-क्रितं।
भव-भूत-भाव समवथं परमं परसन्नमिदं॥
लोभादि-द्रिष्टि परगृहं जदि विधि आचरणं।
तजि सकल दुहक्रित दुरमति भजु चक्रधर सरणं॥
हरि-भगत निज निहकेवला रिद करमणा वचसा।
जोगेन किं जागेन किं दानेन किं तपसा॥
गोविन्द गोविन्देति जपि नर सकल-सिधि-पदं।
जैदेव आए तस सफुटं भव-भूत-सरब-गतं॥

ई ट्रम्प द्वारा उपर्युक्त पदक सेहो जर्मनमे अनुवाद आ' ओहि पर टिप्पणी Sitzungsberichte der philosophisch shilologischen und historischen Classe der Koningliche Akademie der Wissenschaften, Munich 1879, मे हुनक "Die altesten Hindui-

Gedichte" पृष्ठ 8-16 मे कैल गेल। पद संस्कृतमे अछि जे लिपिकार द्वारा विकृत कऽ देल गेल अछि। एकरा ओ बहुत राश अपभ्रंश एवं भाषा-रूपक संग पूर्व भारतीय भाषाक उच्चारणमे पढ़लन्हि। प्रारम्भमे ई सम्पूर्ण मूलतः अपभ्रंशमे लिखल गेल आ' फेर एकर असफल संस्कृतीकरण कैल गेल, जकर वर्त्तनीमे बंगला भाषा वा पूर्वीय भारतीय उच्चारण दृष्टिगत होइत अछि, जकरा ग्रन्थमे गुरुमुखी लिपिमे औरहु परिवर्त्तित कैल गेल। संस्कृत छाया नीचा देल जा रहल अछि :

परमादि-पुरुषम् अनुपमं सद्-आदि-भाव-रतम्।
परमाद्भुतं प्रकृति-परं यद्-अचिन्त्यं सर्व-गतम् ॥१॥
रहाऊ (ध्रुवा)

केवलं राम-नाम मनोरमं वद अमृत-तत्व-मयम्।
न बुनोति यत्-स्मरणेन जन्म-जराधि-मरण-भयम् ॥
इच्छसि यमादि-पराभवं, यश, स्वस्ति, सुकृत-कृतम्
[=सुकृतं कुरुत (?)]

भव - भूत - भाव समव्ययं परमं प्रसन्नम् इदम्।
इदं (वा मिदं=मिद=मिदु वा मुदु=मृदु ?—ट्रम्प) ॥२॥

लोभादि - दृष्टि-परिग्रहं यद् अविधि - आचरणम्।
त्यज सकल-दुष्कृतं दुर्मति, भज चक्रधर-शरणम् ॥३॥

हरि-भक्तः निज निष्केवल ? हृदा कर्मणा वचसा।
योगेन किं, यज्ञेन किं, दानेन किं, किं तपसा ॥४॥

गोविन्द, गोविन्देति जप, नर, सकल-सिद्धि-पदम्।
जयदेव आयातः तस्य स्फुटं भव-भूत-सर्व-गतम् ॥५॥

२. वाणी जयदेव - जिऊ - की राग मारू

चाद सत भेदिया, नाद सत पूरिया,
सूर सत खोड़सा दत्तु किया।
अवल वल ताड़िया, अचल चल थापिया,
अघड़ घड़िया, तहा आपिउ पिया ॥१॥

मन आदि गुण आदि वखानिया
तेरी दुविधा द्रिष्टि सम्मानिया ॥रहाऊ॥

अर्ध-कउ अरधिया, सद्धि-कउ सरधिया,
सलल - कउ सललि सम्मानिआया ।
बदति जयबेव - जयदेव - कउ रम्मिया
ब्रह्म - निर्बाण लिव लिन पाया ॥२॥

भाषाक दृष्टिएँ उपर्युक्त पद अपभ्रंश कालक अपेक्षा एक तरहेँ स्पष्टतः भाषामे अछि आ' एकर मूल प्राचीन वंगला वा वस्तुतः प्राचीन पश्चिमी हिन्दी रहल हो। एतहु हमरालोकनि देखैत छी जे संस्कृत शब्दक वर्णविन्यास पूर्वीय भारतीय उच्चारणक संकेत दऽ रहल अछि। ट्रम्प अपन १८७९ क लेखमे, जकर उल्लेख पूर्वमे कैल गेल अछि, एहि पदकेँ नहि देलन्हि अछि। मैकोलिफ सिख परम्पराक अनुसरण करैत एकर रूपान्तर देने छथि (पृष्ठ १६-१७, अपन छठम जिल्दमे)।१

भाषामे रचित जयदेवक उपर्युक्त वाणी योगसाधनाक धार्मिक एवं उपासनाविषयक प्रचलित पद्धतिमे अछि जे सहस्राब्दीक मध्यकालसँ बाद धरिक प्रत्येक भारतीय विचार-सम्प्रदायक विशेषता रहल आ' खास क' १००० ई०क अव्यवहित अग्रवर्ती ओ अनुगामी शताब्दीमे अत्यन्त प्रभावशाली छल। एकर परिधिमे एक दिश अछि परवर्ती महायान सहजिया (सहजयान) बौद्ध साधनाक प्राचीन वंगला चर्यापद, जे अंशतः **गीतगोविन्दक** जयदेवक समकालिक छल आ' दोसर दिश अछि रहस्यवादी कविता, जकर सम्बन्ध **गोरखनाथक** शैव-योग-साधनासँ एवं हुनक विचार-पद्धति (१२म-१३म शताब्दी)सँ जोड़ल जाइत अछि आ' कबीर एवं अन्य सन्तलोकनिसँ सेहो जे लोकनि अपन मुख्य सहसंबंधमे भक्ति-सम्प्रदायक भगत (भक्त) छलाह, मुदा संग-संग योगाभ्यासी छलाइ।

गुरु ग्रन्थ मे 'जयदेव'क दोसर पद सेहो खूब नीक जकाँ जयदेवहिक रचित भऽ सकैत अछि ई हुनका भाषाक पहिल कविमे प्रतिष्ठित करत (ओहिना जेना संस्कृतक आ' सम्भवतः अपभ्रंशक सेहो)।

□

---

१. मूलग्रन्थमे लेखक एकर बाद मेकोलिफ एवं विसन सिंह ज्ञानीक भगत वाणीमे देल गेल पंजाबी व्याख्याक आधार पर स्वकृत अनुवाद देने छथि। मुदा प्रस्तुत सन्दर्भमे ओहि अंशकेँ अनावश्यक बूझि छोड़ि देल गेल अछि।—अनुवादक।

१०. जयदेवक गीतगोविन्द तथा मध्य-बंगला-साहित्यमे 'मंगल' ओ 'पदावली' : बंगालक आदिकवि जयदेव

सम्पूर्ण आर्य-भारतमे, सामान्यतः परवर्ती भाषा-साहित्य पर जयदेवक जे व्यापक प्रभाव पड़ल तकर अतिरिक्त निश्चयपूर्वक ओ वंगला साहित्यक यथार्थ प्रवर्त्तक एवं प्रेरकमे परिगणित हैताह। गीतगोविन्दक अपन गीत लऽ कऽ ओ बौद्ध चर्या-कविक अल्पायु समकालीन छलाह। ई सभ गीत जकरा काव्यमे सेहो गीत कहल गेल अछि मुदा पदक नामे सेहो परिचित अछि (द्रष्टव्य : जयदेवक भणितासँ आदिग्रन्थक प्रथम भजन जे पद कहि कऽ वर्णित अछि, आ' द्रष्टव्य : जयदेव द्वारा स्वयं एहि शब्दक पदावली कहि कऽ प्रयोग—मधुर-कोमल-कान्त-पदावलीम् शृण तदा जयदेव-सरस्वतीम्"—गीत-गोविन्द १, ३ मे), वंगला-साहित्यमे ओहिना शीर्ष-स्थानीय अछि जेना चर्यापद सभ (९५०-१२०० ई०)। मध्यकालीन वंगला-साहित्यमे दूटा स्पष्ट वर्ग वा शैली अछि : अ—समाख्यान काव्य, जाहिमे कोनो देवता वा महान चरित्रक कथा वा उपाख्यान वर्णित अछि जे सभ मंगल नामसँ परिचित अछि (एहिमे मंगल सभमे पौराणिक देवता वा देवोपम नायक यथा चण्डी वा श्रीकृष्ण वा रामचन्द्र, वा वंगालक लौकिक देवता वा नायक यथा धर्म ठाकुर, धर्मपाल तथा राजा लाउसेन, नागदेवी मनसा आ' विहुला (विपुला) क अपन पति लखिन्दर (लक्ष्मीधर) क प्रति अमर प्रेम, यथा धनपति सौदागर ओ ओकर पत्नी लहना (? लोभना) एवं खुल्लना (? क्षुद्रणा) एवं ओकर पुत्र श्रीमन्त आ' ओकरा सभक साहसिक कृत्य, शिकारी कालकेतु एवं ओकर पत्नी फुल्लराक वर्णन कैल गेल अछि; आ' ब—प्रगीत, पूर्णतः भक्तिपरक एवं अंशतः शृंगारिक, जकरा पद कहल जाइत अछि (वैष्णव-मूलक पद-साहित्य मध्य-वंगला-साहित्यक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ओ अत्यन्त विशिष्ट अंश थिक)। जयदेवक पदावली, जाहि रूपमे ओ गीतगोविन्दमे अछि, मध्य-वंगलाक पद-साहित्यमे शीर्षस्थ अछि, बौद्ध लोकनिक चर्यापदोसँ बेशी। मध्य-वंगलाक

काव्य-रचनाक मँगल ओ पद एहि दू वर्गमे विभाजन किछु अंशमे ओही प्रकारक अछि जेना फारसी एवं उर्दू काव्यके रज्म वा "युद्ध एवं समाख्यान काव्य" तथा बज्म वा "प्रगीत ओ प्रेम-काव्यकेँ गैबाक वा अध्ययन करबाक लेल अंतरंग मजलिश" मे तथा प्राचीन तमिल काव्यकेँ पुरम् वा "समाख्यान" एवं अकम वा "प्रेम" मे वर्गीकृत कैल जाइत अछि।

ई कहव अतिशयोक्ति नहि हैत जे मध्य-बंगलाक—एतेक धरि जे बहुत अंशमे आधुनिक बंगलाक सेहो—वैष्णव अन्तःप्रेरणक प्रगीत सभ गीतगोविन्दक गीत पर आधृत अछि। तखन जयदेवक राधा-कृष्ण विषयक प्रेमाख्यान, यद्यपि श्रेण्य संस्कृतमे अछि, बंगलाक प्राचीनतम मंगलकाव्यक रूपमे स्वीकार कैल जायत जे अखनहु एकगोट जनकाव्यक रूपमे लोकप्रिय अछि। जयदेव एहि एकमात्र कृतिमे दूगोट प्रभेदक विशेषता संयुक्त अछि, कारण जे एहिमे केवल हुनक पद नहि सम्मिलित अछि—एहिमे हुनक चौबीसटा गीतक पदावली अछि—एकर अतिरिक्त मंगलकाव्य सेहो अछि जेना जयदेव स्वयं एहि रूपमे १-२५ मे एकर बखान कैने छथि (गीत संख्या-२, "श्रीजयदेवकवेरिदं कुरुते मुदम् मंगलमुज्ज्वलगीति")। अतः समाख्यान ओ प्रगीत दुनू प्रकारक रचनाक लेल कुशल कविक रूपमे जयदेवक चरम उत्कर्षकेँ भारतक हुनक अपन प्रान्तमे नीक जकाँ अनुभव कैल जा सकैत अछि। यद्यपि हुनक अपभ्रंश एवं प्राचीन बंगलाक रचनाक कोनो प्रचलित प्रामाणिक उदाहरण उपलब्ध नहि अछि—सिख गुरु ग्रन्थक दूटा पदकेँ छोड़ि जे किछु अंशमे दुर्बोध अछि आ' एहु सम्भावनाकेँ छोड़ि जे **गीतगोविन्दक** गीत मूलतः अपभ्रंश वा प्राचीन बंगलामे रहल हैत, ओ न्यायपूर्वक आदिकवि, बंगालक पहिल कुशल कविक रूपमे अभिनन्दित भऽ सकैत छथि, कारण जे पूर्व-मुसलमानी कालक अन्तिम श्रेण्य कवि छथि। □

११. सन्तकविक रूपमे जयदेवक श्रेष्ठता : भक्तमालक अनुशंसा

संस्कृत एवं भाषा-साहित्य, एहि दुनूक क्षेत्रमे जयदेवक अखिल भारतीय प्रभावकेँ, तथा मध्यकालीन वैष्णव-साहित्यमे हुनक उत्कृष्ट स्थानकेँ रखैत, **भक्तमालक** रचयिता नाभादास द्वारा १६म शताब्दीमे एहि प्रारंभिक-व्रजभाषा-पंक्तिमे जे गुणानुवाद कैल गेल अछि से सर्वथा उचित अछि :

"जयदेव कवि नृप - चक्कवइ, खण्ड मण्डलेश्वर आनि कवि ॥
प्रचुर भयो तिहु लोक गीत - गोविन्द उजागर
कोक - काव्य - नव - रस - सरस - शृंगार - को आगर ॥
अष्टपदी अभ्यास करै, तिहि बुद्धि बढ़ाबै ।
राधा - रमण प्रसन्न सुनत हा निश्चय आवइ ॥
सन्त - सरोरुह - खण्ड कऽ पदुमावती - सुख - जनक रवि ।
जयदेव कवि नृप-चक्कवइ, खण्ड-मण्डलेश्वर आनि कवि ॥[1]

□

१. मूलग्रन्थमे लेखक एहि पदक अंग्रेजीमे अर्थ देने छथि । एतय अनावश्यक बुझि ओहि अंशकेँ छोड़ि देल गेल अछि ।—अनुवादक ।

१२. गीतगोविन्द—एकर आठटा सर्ग, चौबीसटा गीत एवं तीन सय छिआसीटा श्लोक : काव्यक नामकरण

गीतगोविन्द संस्कृतक लघु-काव्य थिक। एकर विशेषता अप्रतिम अछि। एहि प्रकारक कोनो रचनासँ ई पृथक सिद्ध होइत अछि। मुदा एकरा सरलतासँ खण्डकाव्य कहल जा सकैत अछि। अपन विषय-वस्तुसँ, यद्यपि अपन रचना-विधानसँ नहि, कहल जा सकैत अछि जे ई संस्कृत-काव्यक ओहि वर्गमे पड़त जाहिमे कालिदासक ऋतुसंहार ओ **मेघदूत** तथा प्रेम-काव्य वा श्लोकक संग्रह सभ, यथा **घटकर्पर**, **अमरुशतक**, भर्तृहरिक शृंगारशतक, विल्हणक **चौरपंचाशिका** एवं एहि ढंगक अन्य कृति सभ अछि। एकर विशेष लक्षण एहिमे निहित अछि जे एहिमे प्रेम-दशाक विवरण तथा प्रेमक अन्तरंग दृश्य सभक वर्णन करैत शृंगारिक कविताक सम्मिलन अछि आ' संग-संग संभाषण ओ नाटकीय तत्वक अन्तर्धारा अछि। एहि काव्यमे दूगोट शैलीक सेहो सम्मिश्रण अछि—वर्णनात्मक अंश सामान्य श्रेण्य संस्कृत श्लोकमे अछि आ' गीत सभ अपभ्रंश छन्द-रचनाक स्मरण दियावैत अछि जाहिमे अन्त्यानुप्रास ओकर उल्लेखनीय विशेषता अछि।

वर्णनात्मक अंश ओ चौबीसटा गीत—जे बारहो सर्गमे, जाहिमे काव्य विभाजित अछि, विकीर्ण अछि—एहि दुनू अंशमे सभटा मिलाक' २८६ टा श्लोक अछि। एहि सर्ग सभमे बस एकटा कथानक अछि। प्रथम सर्गमे, प्रारंभिक भूमिका, जे मंगलाचरण थिक आ' जाहिमे विष्णुक दशावतारक दूगोट प्रार्थना अछि; तकर अनन्तर काव्य प्रारंभ होइत अछि।

पहिल सर्गमे नाटकीय तत्व बड़ थोड़ अछि—ई अछि प्रधानतः गीतात्मक। एहिमे वृन्दावन मध्य राधा-कृष्णक प्रेम-कथाक एकटा घटनामात्र अछि। गोपीवल्लभ कृष्ण असंख्य गोपीसभक संग प्रेम-क्रीड़ामे व्यस्त छलाह। वसन्त ऋतुमे कृष्ण लगैत छलाह जेना शृंगारक साकार मूर्त्ति होथि। एहि

सर्गमे वसन्तकालीन प्रकृतिक थोड़-बहुत अलंकृत वर्णन अछि, जे जयदेवक सुमधुर श्लोकक चारुताक पूर्णतः निरूपक अछि। पहिल सर्ग जकर शीर्षक अछि **सामोद दामोदर** अर्थात् दामोदर वा कृष्ण जे आह्लादसँ पूर्ण छथि। एहिसँ समाप्त भऽ जाइत अछि आ' तखन अबैत अछि दोसर सर्ग, जकर शीर्षक अछि **अक्लेश-केशव** अर्थात् केशव वा कृष्ण जनिका कोनो शोक वा संताप नहि छन्हि। एहि सर्गमे दूटा गीत अछि आ' वर्णनमे कहल गेल अछि जे आन गोपी सभक संग कृष्णकेँ क्रीड़ा करैत देखि राधाकेँ ईर्ष्या भेलन्हि आ' ओ उदास भऽ गेलीह। अपन असन्तोष ओ अपन एकटा अंतरंग सखीक लग प्रकट कैलन्हि। एहि असन्तोषमे, जे किछु गीतक माध्यमेँ अछि, राधा केवल अपन प्रतिस्पर्द्धी गोपीसभक संग कृष्णक क्रीड़ाकेँ नहि दोहरबैत छथि अपितु कृष्णक संग अपन आनन्दक क्षणक सेहो स्पृहापूर्वक स्मरण करैत छथि। तेसर सर्ग, जकर शीर्षक अछि **मुग्ध-मधुसूदन** अर्थात् आसक्त कृष्ण, ताहिमे वर्णित अछि जे राधाक उपेक्षाक कारणेँ कृष्ण कोना खेदक अनुभव कैलन्हि आ' आव ओ मनहि-मन पाश्चात्ताप कऽ रहल छथि जे राधा हुनकासँ उचिते क्रोधित भऽ गेलथिन्ह अछि। कृष्ण, यद्यपि मनहिमे, हुनका सँ क्षमा-याचना करैत छथिन्ह। किछु सुन्दर गीतक माध्यमेँ हुनक मनोभावकेँ व्यक्त कैल गेल अछि आ' एकर संग हुनक तथा राधाक अन्तरंग प्रेमक्रीड़ाक वर्णन संयुक्त अछि।

चारिम सर्ग, जे **स्निग्ध-मधुसूदन**, अर्थात् कृष्ण जे आनन्दक अनुभव कऽ रहल छथि ओ शन्तिपूर्ण स्थितिमे छथि, नामेँ ज्ञात अछि, ताहिमे हमरालोकनिकेँ राधाक एकगोट सखीक वर्णन भेटैत अछि जे कृष्णक लग जाय कहैत छथिन्ह जे राधा स्वयं कृष्णसँ अपन वियोगक तीव्र अनुभव कऽ रहलि छथि तथा ओ विरहक कष्ट भोगि रहलि छथि आ' वेदनाक एहि आवेशमे ओ हुनक साहचर्यक लेल विकल छथि तथा अत्यन्त पीड़ाक अनुभव कऽ रहलि छथि। राधाक एहि दशाक वर्णन दूटा अत्यन्त मधुर गीतमे कैल गेल अछि जे एहि सर्गकेँ अलंकृत करैत अछि।

पाँचम सर्ग, **साकांक्ष-पुण्डरीकाक्ष**, अर्थात् कमलनयन कृष्ण जे अभिलाषासँ पूर्ण छथि, नामेँ प्रसिद्ध अछि। एहिमे राधाक प्रेम-सन्देशक प्रति कृष्णक प्रतिक्रियाकेँ व्यक्त कैल गेल अछि। ओ राधाक दूतीकेँ राधाक लग घुरि जाय कहलथिन्ह आ' हुनका ओहि कुंजमे आनय कहलथिन्ह जतय ओ प्रतीक्षा कऽ रहल छथिन्ह। एहि सर्गमे दूटा विशिष्ट गीत अछि जे संस्कृतक अत्यन्त

संगीतात्मक रचनामे सँ अछि, जाहिमे रासक्रीड़ामे राधाकेँ समीप नहि रहने कृष्णक मनःस्थितिक वर्णन कैल गेल अछि। राधाक सखी घुरि कऽ गेलीह आ' राधाकेँ कृष्णक लग अयबाक लेल मनौलन्हि, तकरहु सुमधुर श्लोकमे कहल गेल अछि।

छठम सर्गक शीर्षक अछि **धृष्ट-वैकुण्ठ**, अर्थात् कृष्ण जे आक्रान्ता वा अपश्चात्तापी तथा निर्लज्ज छथि। ई सर्ग छोट अछि जाहिमे केवल बारहटा श्लोक अछि आ' एकटामात्र मधुर गीत। एहिमे देखब जे कृष्णसँ वियोगक कारणेँ राधा एतेक दुर्बल भऽ गेलीह अछि जे ओ कृष्णसँ भेट करय नहि जा सकलीह; आ' हुनक दूती कृष्ण लग जा कऽ एकटा गीतक माध्यमेँ हुनक दशाक वर्णन करैत छथिन्ह जे राधा कृष्णक प्रति भावमय छथि आ' हुनका अमन्तोष छन्हि जे ओ नहि आबि सकैत छथि आ' ओ कृष्णक आगमनक उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कऽ रहलीह अछि।

सातम सर्ग सब तरहेँ पैघ अछि—काव्यक दोसर सभसँ पैघ सर्ग। एकर शीर्षक अछि **नागर-नारायण**, अर्थात् नारायण वा कृष्ण, राधाक रसिया वा प्रेमीक रूपमे। एहिमे वर्णित अछि जे कृष्ण कोना राधासँ भेट करय नहि जा सकलाह, यद्यपि चन्द्रोदय होइतहि हुनक पहुँचि जयबाक अनुमान छल। एहि अवधिमे राधा सघन कुंजमे हुनक प्रतीक्षा कऽ रहलि छलीह आ' विह्वल छलीह। एहि सर्गक पहिल गीतमे राधाक विलाप अछि। राधाकेँ आशंका छलन्हि जे कृष्ण कोनो अन्य गोपीक संग छथि। हुनकर आशंका औरहु प्रबल भऽ उठलन्हि जखन ओ अपन दूतीकेँ कृष्णक ओतयसँ एकसरि घूरलि अबैत देखलन्हि। एकर बाद दूटा अन्य गीत अछि आ' ओ दूनू अपन शाब्दिक संगीतमे अत्यन्त मधुर अछि। एहिमे राधा अपन प्रतिस्पर्द्धी कोनो एक गोपीक संग कृष्णक कौतुक एवं प्रेम-क्रीड़ाक सजीव वर्णन करैत छथि। राधा दक्षिण पवन, कामदेव एवं यमुना नदीसँ सेहो निवेदन करैत छथि जनिक उपस्थितिए हुनक विरह-वेदनाकेँ बढ़ा रहल छल।

आठम सर्ग सेहो छोट अछि आ' एहिमे एकहिटा गीत अछि आ' एकर शीर्षक छैक **विलक्ष-लक्ष्मीपति** वा लक्ष्मीपति कृष्ण वा नारायण, जे आश्चर्य-चकित वा विमूढ़ छथि। एहिमे एकटा अन्य घटनाक वर्णन अछि। भोर भऽ गेल छल आ' राधा कृष्णक अनुपस्थितिमे जागि कऽ राति कटने छलीह आ' आब कृष्णसँ भेट करबाक लेल व्यग्र छलीह। मुदा जखन कृष्ण अयलाह आ'

अपनाकेँ हुनक चरण पर अर्पित कऽ देलन्हि तँ राधाक क्रोध प्रज्वलित भऽ उठलन्हि आ' ओ हुनक भर्त्सना करय लगलीह आ' हुनका घूरि कऽ अपर स्त्री लग चल जाय कहलथिन्ह जकरा संग ओ अपन समय बिता रहल छलाह।

नवम सर्गक शीर्षक अछि—**मुग्ध-मुकुन्द** वा मुकुन्द वा कृष्ण जे मंत्रमुग्ध छलाह। एहिमे सेहो एगारहटा श्लोक आ' केवल एकटा गीत अछि। कृष्णकेँ चल गेला पर राधा हुनका विषयमे सोचि रहलि छलीह आ' हुनक मानसिक भाव आब नरम भेल जा रहल छलन्हि आ' हुनक सखी हुनका कृष्णक प्रति सदय हैबाक लेल कहि रहलि छलथिन्ह कारण जे ओ पुनः राधाक संग मिलनक लेल संकेत-स्थल पर आबि रहल छलाह।

दशम सर्गक शीर्षक अछि—**मुग्ध-माधव**। इहो एकटा छोट सर्ग अछि जाहिमे एकहिटा गीत अछि आ' ई गीत सुप्रसिद्ध अछि। वर्णनात्मक अंशमे कहल गेल अछि जे साँझ भऽ रहल छल आ' राधाक क्रोध किछु अंशमे शान्त भऽ गेल छलन्हि, आ' जखन कृष्ण पुनः अबैत छथि तँ राधा किंचित् लजायलि छलीह आ' अपन सखीक दिश ताकि रहल छलीह, आ' तखन कृष्ण हुनक कोपकेँ हटयबाक प्रयास कैलन्हि एवं बेर-बेर हुनका अपना प्रति सदय हैबाक लेल कहलथिन्ह, हुनक गुणानुवाद कैलथिन्ह आ' पूर्वमे परस्पर जे आनन्द प्राप्त भेल छलन्हि तकर स्मरण दियौलथिन्ह। एहि सर्गक गीतक अंश-विशेषमे ओ अपना प्रति सदय हैबाक लेल आ' अपन (राधाक) दूनू कमनीय चरणकेँ आरतसँ रङि देबाक लेल प्रार्थना करैत छथिन्ह—हुनक दूनू चरण जकर स्पर्श वासनाक विषकेँ हटा देत से हुनक सता रहल छलन्हि आ' जे हुनक माथक अलंकरण बनि जायत (स्मर-गरल-खण्डनं, मम शिरसि मण्डनं, देहि पद-पल्लवमुदारम्।)

एकटा कथा अछि जे वैष्णव भक्तिक आख्यान-संग्रहक थिक। एहिमे कहल गेल अछि जे जयदेव जखन एहि गीतक रचना कऽ रहल छलाह तँ बड़ीकाल धरि असमंजसमे छलाह जे हुनका लेल कृष्णसँ, जे चरम दैवत विष्णुक अवतार एवं जगन्नाथ छथि, एहि ढंगे राधाकेँ कहायब आ' अपन (राधाक) चरण अपना (कृष्णक) माथ पर राखबाक लेल अनुरोध करायब कहाँ धरि उचित हैत। ओ सोचि रहल छलाह जे ई धर्मनिन्दाक पराकाष्ठा हैत—विष्णुक व्यक्तित्वक अपमान करब हैत आ' ओ बड़ी काल धरि एहि गुन-धुन मे लागल रहलाह। मुदा ओ निर्णय नहि कऽ सकलाह जे एहि आशयकेँ एहि

काव्यमे राखब उचित हैत वा नहि। अबेर भेल जा रहल छल आ' हुनक पत्नी पद्मावती आबि कऽ कहलथिन्ह स्नान कऽ आउ आ' भोजन कय थोड़ेक विश्राम कय लियऽ आ तखन फेर एहि पर सोचब। हुनका संग-संग पद्मावतीकेँ सेहो भोजन करबामे विलम्ब भऽ रहल छलन्हि। कर्त्तव्यनिष्ठ, स्नेहमय एवं विचारशील पति सदृश जयदेव लगमे बहैत गंगामे स्नान करय गेलाह आ' तखन भोजन करय अबितथि। एहि बीचमे, किछु कालक बाद पद्मावती देखैत छथि जे जयदेव एक तरहेँ बड़ जल्दी स्नान कऽ घूरि आयल छथि। मुदा ओ हुनका भोजन परसि देलथिन्ह। भोजन समाप्त कऽ चुकला पर जयदेव पहिनहि जकाँ विश्राम करबाक लेल अपन कोठलीमे चल गेलाह आ' केबाड़केँ बन्द कऽ लेलन्हि। तकर बाद कर्त्तव्यनिष्ठ हिन्दू पत्नी सदृश पद्मावती अपने भोजन करय बैसलीह। ओ पतिक थारीमे जे किछु अवशिष्ट छलन्हि ताहीमे खाय लगलीह। जखन ओ खा रहलि छलीह त एना लगलन्हि जे जयदेव पुनः स्नान कऽ कऽ आबि रहल छथि। अपन पतिक पुनरागमनक विषयमे सोचि कऽ ओ आश्चर्यचकित छलीह। मुदा ई वास्तविक जयदेव छलाह। हुनको आश्चर्य भऽ रहल छलन्हि जे हुनका खयबासँ पहिनहि हुनक पत्नी कोना भोजन करय बैसि गेलीह। एहन स्थितिमे पति-पत्नी दूनूगोटे विमूढ़ भेल रहथि। ओलोकनि ओहि कोठलीमे जाइत गेलाह, जाहिमे, जेना पद्मावतीक विश्वास छलन्हि जे जयदेव, अपेक्षाकृत बड़ जल्दी स्नानसँ आबि, भोजन कय, विश्रामक लेल गेल छलाह। मुदा ओतय ओलोकनि ककरहु नहि देखलथिन्ह। तखन जयदेवक ध्यान अपन पाण्डुलिपि दिश गेलन्हि जाहिमे ओ अपन गीतकेँ अपूर्ण छोड़ि गेल छलाह। ओहिमे ओ देखलन्हि जे केओ पंक्तिकेँ ओहि तरहेँ लिखि देने छल जेना ओ **गीत-गोविन्दक** एहि सर्गक सतरहम संख्यक गीतमे अछि। पति-पत्नी दुनू गोटे अवाक रहथि। ओलोकनि कृष्णक अनन्य भक्त छलाह आ' एकरा एकटा चमत्कार बुझलन्हि। कृष्ण स्वयं जयदेवक रूप धारण कय हुनका ओतय आयल छलथिन्ह आ' स्वयं कृष्ण, राधाक प्रति अपन अपार प्रेमक कारणेँ एकरा कोनो तरहेँ सम्मानक प्रतिकूल नहि बुझथिन्ह यदि ओ ओहि अपार प्रेममे राधाकेँ अपन माथ पर हुनक राधाक चरण-कमल रखबाक लेल कहैत छथिन्ह। एहि तरहेँ, एहिमे दिव्य प्रेमक एकटा पक्षक गम्भीर अभिव्यंजन छल जकर शिक्षा कृष्ण अपन प्रिय भक्तकेँ देबय चाहैत छलाह। जयदेव एवं पद्मावती भावोन्मादमे रहथि, जे कृष्ण स्वयं एहि तरहेँ आयल छलथिन्ह। हुनकालोकनिक आनन्दक ओर-छोर नहि छलन्हि।

जयदेव अपन पत्नीक थारीमे खाय लगलाह, कारण जे ओहिमे जे भोजन छल से स्वयं कृष्ण द्वारा छोड़ल, आ' एहि लेल ओ ईश्वर द्वारा ग्रहण कैल गेल पवित्र भोजन भऽ गेल छल। राधा-कृष्णक भक्त जे **गीत-गोविन्द** केँ ईश्वरप्रेरित धार्मिक काव्य बुझैत छथि, एहि कथासँ आह्लादित होइत छथि। एहिमे निश्चित रूपसँ विश्वासक अपन सरस सौन्दर्य छैक।

परवर्त्ती सर्गक नाम अछि -- **सानन्द-गोविन्द** अर्थात् गोविन्द वा कृष्ण जे आनन्दमे मग्न छथि। एहिमे चौंतीसटा श्लोक आ' तीनटा गीत अछि। सम्प्रति कृष्ण मृगनैनी राधाकेँ बौंसवामे पटु छलाह। एहि सर्गक पहिल गीत राधाक एकगोट सखी द्वारा गाओल गेल अछि जाहिमे ओ राधासँ कृष्णक प्रति अनुकूल भऽ कऽ हुनका आनन्द प्रदान करय कहैत छथिन्ह। हुनकर अन्य सखी पहिले गीतक स्वरमे दोसर जे गीत अछि से गावि कऽ राधाकेँ सुनबैत छथिन्ह। एकर बाद राधा-कृष्ण अपन खास लता-मण्डपमे प्रवेश कैलन्हि आ' एतय युगल प्रेमीक मिलनक सरस काव्यात्मक वर्णन अछि। राधाक सखी सभ हुनका दूनूकेँ अपन लता-मण्डपक एकान्तमे छोड़ि देलथिन्ह जे हुनक कोबर-घर बनि गेल। एहि सुखद अन्त पर दुनूगोटे कौशलपूर्वक मुस्कुरा रहल छलाह। ई सभटा संस्कृतक मधुर श्लोकमे वर्णित अछि।

अन्तिम सर्गमे उनतीसटा श्लोक आ' दूटा गीत अछि। एहिमे निष्पत्ति अछि जे श्लोकमे वर्णित अछि। ई सभ श्लोक मधुर मुदा इन्द्रिय-आसक्ति एवं प्रेम-क्रीड़ाक प्रति निश्छल आसक्तिसँ परिपूरित अछि। कृष्ण पहिल दूटा गीत गबैत छथि आ' तत्पश्चात् प्रेम-क्रीड़ाक किछु अन्तरंग दृश्यावलीक वर्णन अछि। एतय हमरालोकनिकेँ शृंगारिक वर्णनक नैसर्गिक पराकाष्ठा भेटैत अछि, मुदा वैष्णव भक्तगण—ओ सभ जनिक मानस एहि प्रकारक काव्यसँ समस्वर छन्हि, एकरा गहन आध्यात्मिक अभिप्रायक बुझैत छथि, आ' एहिमे एहन किछु नहि भेटैत छन्हि जाहिसँ हुनक अनुभूति पर आघात होइत होन्हि, यद्यपि इन्द्रिय-आसक्ति, एतेक धरि जे कामुक एवं दैहिक प्रेमाचारक ई अनवरत आवृत्ति, सुरुचिकेँ सिहरा देत; एहि विषयमे जतेक कहल जाय थोड़ हैत। एहि तरहेँ काव्यक रूपमे **गीत-गोविन्दक** अन्त भऽ जाइत अछि।

एहि सर्गक शीर्षक अछि—**सुप्रीत-पीताम्बर** अर्थात् पीताम्बर वा कृष्ण, अपन पीत वस्त्रमे जे पूर्णतः संतुष्ट छथि।

प्रो० सुकुमार सेन संकेत कैलन्हि अछि—आ' हम बुझैत छी जे ई संकेत सर्वथा मान्य अछि—जे एहि बारहो सर्गक संस्कृत शीर्षक, प्रत्येक शीर्षकमे नायकक रूपमे कृष्णक चारित्रिक विशेषताक प्रतिपादन भेल अछि, एहि कृतिक लेल **गीत-गोविन्द** नामक उद्‌भव ओ अभिप्रायकेँ स्पष्टतः कहैत अछि। **गीत-गोविन्द** शीर्षकमे सेहो कृष्णक चारित्रिक विशेषता सन्निविष्ट अछि; गीत-गोविन्दक अर्थ भेल "गोविन्द वा कृष्ण जनिकर गीत एहि काव्यमे गाओल गेल अछि" वा "गोविन्द वा कृष्णक प्रेम-कलाक गीत"।

१३. गीतगोविन्दमे 'लौकिक प्रेम' एवं 'दिव्य प्रेम'

गीत-गोविन्दमे शाब्दिक संगीतक जे चरम सौन्दर्य अछि, ताहि कारणेँ एकरा कोनो अन्य भाषामे, जे संस्कृतक माधुर्यगुणसँ समस्वर नहि अछि, स्पष्टतः अनुवाद नहि कैल जा सकैत अछि। एकर गुणावधारणक लेल आवश्यक अछि जे एकर पंक्तिकेँ, खास कऽ गीतक पंक्तिकेँ, सस्वर पाठ वा गओला पर सुनल जाय। कोनो साहित्यिक रचनामे, वाह्य रूप वा वाह्य अभिव्यक्ति पर एहि प्रकारक एकान्त निर्भरता अवश्ये दोष वा त्रुटि थिक; कारण जे वाह्य रूपसँ वड़ वेशी महत्त्व विषय-वस्तु वा सारतत्वक होइत अछि। आ' एतय **गीतगोविन्दक** गुणावधारणमे पाठकक विचार-पद्धति, ओकर व्यक्तिपरक मनोभाव, निर्णायक तत्व अछि।

गीतगोविन्दक मुख्य विषय थिक—प्रेम अर्थात शृंगार वा दैहिक प्रेम तथा यौन-सम्पर्क ओ प्रणय-क्रीड़ा वा निश्छल 'लौकिक प्रेम'। एकर पृष्ठभूमिमे अछि प्रकृति—प्रधानतः वसन्तकालीन प्रकृति जे वृक्ष, लता तथा फूल; हरित पर्वतमाला एवं प्रवहमान सरिता; पक्षीक कलरव एवं मधुकरक गुंजन एहि सभसँ युक्त अछि। मुदा **गीतगोविन्दमे** एहि प्रकृतिक वर्णन केवल परम्परागत एवं औपचारिक ढंगक अछि। एहिमे प्रकृतिक विभिन्न पक्षक गुणावधारणमे सुन्दरतर ओ गहनतर स्वरक अभाव अछि। **गीतगोविन्दक** प्रेम केवल काम वा दैहिक प्रेम तथा शृंगार वा यौन-सम्पर्कक वर्णन थिक। ई प्रकट रूप मे लौकिक एवं दैहिक अछि। प्रेमक सूक्ष्म, गम्भीर एवं आध्यात्मिक अभिव्यक्ति—प्रेमन् वा प्रेम जे दैहिक सम्पर्ककेँ अतिक्रम करैत अछि, ताहि रूपमे; प्रीति वा हृदयक आकर्षणक रूपमे—वस्तुतः जे प्रेमक उन्नत अवस्था थिक, **गीतगोविन्दमे** कदाच् वर्णित अछि। किछु विरल अंशकेँ छोड़ि, यथा गीत-८, सर्ग-४ मे (सा विरहे तव दीना... भावनया त्वयि लीना), गीत-९, सर्ग-४ मे; गीत-१२, सर्ग-६ मे (मुहुरवलोकित-मण्डन-लीला, मधुरिपुरहमिति भावनशीला), वा गीत-१९, सर्ग-१० मे (त्वमसि मम भूषणम्, त्वमसि मम

जीवनम्.....देहि पदपल्लवमुदारम्)। मुदा **गीतगोविन्दमे** वर्णित प्रेम ओ प्रेमावस्था जे सर्वदा पूर्वोक्त ढंगक दैहिक अछि, एकरस ओ अरुचिकर भऽ जाइत अछि, आ, एतेकधरि जे हमरालोकनिक भावपूर्ण ओ मधुर चेतनाकेँ सिहरा दैत अछि। बंगालक एकगोट महान साहित्य-समालोचक बालेन्द्रनाथ टैगोर (रवीन्द्रनाथ टैगोरक भातिज, जयदेव पर अपन लेखमे, जे सर्वप्रथम फाल्गुन, बंगाब्द १३००=१८९४ क 'साधना' पत्रिकामे प्रकाशित भेल), जयदेव पर असाधारण आलोचनात्मक अध्ययन—सूक्ष्म ओ मर्मस्पर्शी-प्रस्तुत कैलन्हि। ओ कहलन्हि जे यद्यपि वैदिक उर्वशीक निर्व्याज, मूलभूत शृंगार एवं पुरूरवाक गाथाकेँ ओकर अनावृत सौन्दर्यक निष्कलुषतामे अपन दीप्ति ओ ख्याति छैक, जे हमरालोकनिक मनकेँ अश्लीलता ओ कलुषताक समग्र संवेदनशीलतासँ ऊपर उठा दैत अछि, त **गीतगोविन्दक** तात्पर्य सर्वथा भिन्न अछि। बालेन्द्रनाथ टैगोर एहि संक्षिप्त अभिमतक संग एहि विषयकेँ सोझरा देलन्हि अछि: "ई भऽ सकैत अछि जे **गीतगोविन्दमे** गीत सभ अछि, मुदा हमरा सभकेँ गोविन्दक (अर्थात् विष्णु वा परमात्माक) विषयमे शंका अछि जे ओहिमे छथि।"

उन्नैसम-बीसम शताब्दीक लब्धप्रतिष्ठ लेखक ओ आलोचक **गीतगोविन्दक** प्रति अपन सराहना व्यक्त कैलन्हि अछि, मुदा ओ सभकेओ युक्तिनिष्ठ रहलाह अछि आ' हुनक प्रशंसा सीमान्तर्गत रहल अछि; यदि ओ मध्यकालीन विचार-सम्प्रदायक प्रति आस्थावान वा कट्टर वैष्णव नहि रहल होथु। बालेन्द्रनाथ टैगोर सहित प्रमथनाथ चौधरीक समालोचना (जकरा लेल आगाँ द्रष्टव्य) आधुनिक सुसंस्कृत पाठकक बहुसंख्यक द्वारा सामान्यतः स्वीकृत अछि, जे कट्टर वैष्णव नहि छथि आ' ई थोड़-बहुत काव्यक बंगाली पाठकक विचारक अनुरूप अछि। अपन संस्कृत भाषा ओ संस्कृत-साहित्य-शास्त्र विषयक प्रस्ताव (लेखक—ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, तृतीय संस्करण, कलकत्ता १८६३—एहि विषय पर बंगलामे पहिल कृति) मे संस्कृत साहित्यक सूक्ष्मदर्शी अध्येता विद्यासागर निम्नलिखित अभिमत देने छथि: "एहि महान काव्यक रचना मधुर, मृदु ओ आकर्षक अछि आ' एहि तरहक रचना संस्कृत साहित्यमे अधिक संख्यामे उपलब्ध नहि अछि। हुनक वर्णन तहिना हृदयकेँ विमोहित करैत अछि। मुदा यदि जयदेवक कवित्वशक्ति ओतबहि महान छलन्हि जतेक हुनक असाधारण कौशल जकरा ओ अपन श्लोक-रचनामे देखौलन्हि अछि त हुनक **गीतगोविन्दकेँ** अद्भुत

एवं अपूर्व श्रेष्ठकाव्य मानल जाइत। कालिदास, भवभूति एवं अन्यान्य आचार्य ...सदृश महाकविक अपेक्षा जयदेव प्रायः न्यून कोटिक छथि। तथापि लगैत अछि जे जयदेव, वंगालमे जे संस्कृतक कविलोकनि भेलाह ताहिमे प्रमुख एवं महान छथि।"

रवीन्द्रनाथक पूर्ववर्ती, उन्नैसम शताब्दीक वंगलाक सर्वश्रेष्ठ लेखक बंकिमचन्द्र प्रेमकविक रूपमे जयदेव ओ विद्यापतिक तुलनात्मक अध्ययन पर एकटा लेख लिखने छथि। एहिमे जयदेव द्वितीय सर्वश्रेष्ठक रूपमे प्रकट होइत छथि आ' बंकिमचन्द्र द्वारा मौलिक विशेषतायुक्त किछु मन्तव्य देल गेल अछि एहि तरहेँ—"जयदेव सदृश कविमे हमरालोकनि वाह्य संसारक प्रधानता पवैत छी; विद्यापति एवं हुनका सदृश अन्यमे हमरालोकनि अन्तरात्माक राज्यमे छी। जयदेव एवं विद्यापति दूनू, राधा-कृष्णक प्रेमक विषयमे गवैत छथि। मुदा प्रेमक गीत, जे जयदेव गवैत छथि हमरालोकनिक बाह्य जीवनक अनुसरण करैत अछि। मुदा विद्यापतिक गीत, आ' खास कऽ चण्डीदासक, अन्तरात्माकेँ ऊपर उठा दैत अछि.....इन्द्रिय-बोधक संग, भौतिक शरीरक संग हमरालोकनिक अपूर्ण वाह्य सम्बन्धकेँ जखन अधिक मात्रामे उपस्थित कैल जाइत अछि त ओ काव्यकेँ एक तरहेँ मांसल बना दैत अछि। विद्यापति एवं शेष व्यक्ति केवल मनुष्यक हृदयमे अन्वेषण करैत छथि, ओकरा कामुकतासँ फराक कऽ कऽ; फलस्वरूप विद्यापति एवं हुनक समतुल्य व्यक्तिकेँ इन्द्रिय-बोधसँ कोनो सम्वन्ध नहि छन्हि—आ' एकर संस्कार किछु एहन वस्तुमे भेल अछि जे विषयानुरागसँ ऊपर अछि, किछु एहन वस्तुमे जे अकलुष एवं मर्यादित अछि।" वंकिमचन्द्र सुन्दर एवं विश्वनीय भाषामे एहि परस्पर-विपर्ययक अनुशीलन कैलन्हि अछि आ' जयदेवक यथोचित प्रशंसा कैलन्हि अछि, जकर ओ इन्द्रियनिष्ठ काव्यक परिसीमामे सर्वथा योग्य छथि। एकर अतिरिक्त, वहुत पहिनहि १८७० मे, ए पोपुलर लिटरेचर आफ वंगाल शीर्षक लेखमे वंकिमचन्द्र जे मत प्रकाश कैने छथि से एहि रूपक अछि: "आदिसँ अन्त धरि एहि गीतगोविन्द मे पुरुषोचित संवेदनाक एकोटा अभिव्यक्ति वा एकोटा उन्नीत भाववृत्ति नहि अछि—नारीसुलभ संवेदनाक अभिव्यक्ति पर्याप्त अछि। कविकेँ एकोटा नव सत्यक शिक्षा देवाक नहि छन्हि। सामान्यतः कविएलोकनि (धार्मिक ओ पार्थिव) छथि, जे हमरालोकनिकेँ भव्य नैतिक सत्यक शिक्षा दैत छथि, जे मनुष्यक जीवनकेँ

मानवताक प्रति मंगल-कामनासँ भरि दैत अछि। मुदा जयदेव दोसर प्रकारक कवि छाथे। किछु अर्थमे हम हुनक काव्य-प्रतिभाकेँ अस्वीकार नहि करैत छी, यथा सुन्द्रर बिम्वविधान, सुकुमार संवेदना तथा अभिव्यक्तिक अप्रतिम क्षमता; मुदा से हुनका विषयासक्त एवं विलासी कविक श्रेणीसँ पृथक नहि कऽ पवैत अछि। (वंकिमचन्द्र अपन वंगाली समाजकेँ क्षमा नहि करैत छथि आ' ओ कनेक अनिष्पक्ष तथा वड़ वेशी कठोर छथि : सुनीति-कुमार चटर्जी)। मृदु एवं मधुर संवेदनशीलताक संग सुकुमार आ' बहुधा स्थूल-रूपमे इन्द्रियनिष्ठ, अतिशय अनुनादित मुदा सर्वदा अर्थहीन नहि, हुनक श्लोक अकर्मण्य एवं विषयासक्त जातिक मनोभावकेँ प्रतिध्वनित कैलक।" (वंकिम-रचनावली, जिल्द-३, अंग्रेजी कृतिक संग्रह; सम्पादक-योगेशचन्द्र वागल, प्रकाशन-१९६९, साहित्य संसद, कलकत्ता, पृ-९८।)

वंगलामे जयदेव विषयक दोसर महत्त्वपूर्ण लेख अछि समालोचक, निवन्धकार एवं उपन्यासकार प्रमथनाथ चौधरीक (१८६८-१९४६) लिखल, जकर हमरालोकनि उपेक्षा नहि कऽ सकैत छी। जयदेवक काव्यक हुनक सविशेष विश्लेषणात्मक अध्ययन सर्वप्रथम वंगाब्द १२९७=१८१० ई० मे प्रकाशित भेल। जयदेव द्वारा प्रकृतिक एवं प्रेमक जे प्रतिपादन कैल गेल अछि तकर ई विदग्धतापूर्ण अध्ययन प्रदान करैत अछि तथा ओकरा सभकेँ काव्यकला ओ सौन्दर्यशास्त्र दुनू दृष्टिएँ सूक्ष्म जिज्ञासाक लेल अर्पित करैत अछि। केओ कहि सकैत अछि जे एहि लेखमे जयदेवकेँ ओहि मिथ्या मूल्यसँ मुक्त करबाक प्रयास कैल गेल अछि जे हुनक कट्टर प्रशंसक द्वारा हुनका संग सम्बद्ध कऽ देल गेल अछि। तथापि प्रमथनाथ चौधरी जयदेवक अतिशय लोकप्रियताकेँ स्वीकार करैत छथि आ' ओकर ऐतिहासिक हेतुकेँ ताकवाक प्रयास करैत छथि। ओ थिक हुनक शब्द-चयनमे संदेहातीत माधुर्य, एहि संग हुनक सामान्य पाठक एवं प्रशंसकक संस्कृतक सर्वविदित ज्ञानाभाव आ' एहिसँ मिलल ऐन्द्रिय सौन्दर्य एवं दिव्य प्रेमक वातावरण; ओ प्रेम जकरा अलंघनीय, पवित्र तथा आध्यात्मिक बुझबाक शिक्षा हमरा सभकेँ देल जाइत अछि।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर, जेना ओ स्वयं अपन आत्मकथा (जीवन-स्मृति) मे कहने छथि, जखन ओ दस-वारह वर्षक वालक छलाह, त जयदेवक श्लोक एवं हुनक भाषामे निहित संगीत एवं सौन्दर्यक आकर्षणमे पड़ि गेलाह, यद्यपि ओहि वयसमे ओ नहि बुझि सकलाह जे एहि काव्यक विषय की थिक। आ' ने परवर्त्ती कालमे ओ जयदेवमे स्थायी महत्त्वक कोनो वस्तु पावि

सकलाह। मुदा जयदेवक गीतक स्वरसंक्रमक प्रभाव हुनक काव्य पर गम्भीर रूपेँ पड़ल आ' जयदेवक किछु छन्द-रचनाकेँ बाँगलामे अनुकरण कैने विना नहि रहि सकलाह। **गीतगोविन्दक** प्रथम श्लोकसँ, गठन ओ विषयवस्तु दूनूक लेल, हुनका विशेष आकर्षण छलन्हि आ' अपन प्रशंसाक ओ चमत्कारी साक्ष्य देलन्हि अछि।

ऊपर जे कहल गेल अछि से एकटा दृष्टिकोण भेल। दोसर जे अछि से कट्टर वैष्णव भक्तक। हुनका ऐश्वर्य ओ प्रेमक भगवानक रूपमे विष्णुमे (खास कऽ हुनक कृष्णावतारमे) गहन निष्ठा छन्हि। देवत्वक दर्शन आ' तत्पश्चात् प्रपत्तिक लेल जीवात्माक लालसाकेँ बोध करबामे ओ अभ्यस्त छथि। एकरा ओ प्रतीक वा रूपकक माध्यमेँ करैत छथि। ई प्रतीक वा रूपक थिक वृन्दावनक गोपी, जनिक शिरोमणि छथि राधा, तनिक प्रेमोत्सर्ग, सुदर्शन किशोर भगवान् श्रीकृष्ण, जे जगतक अभीप्सित छथि, पुरुषोत्तम छथि, तनिक प्रति प्रेम; जाहि श्रीकृष्णक प्रति मानव जातिक प्रेम ओहिना अछि जेना कृष्ण-प्रेयसी राधाकेँ छन्हि।

ई ओ थिक जकरा **कृष्ण-प्रेमक** नामेँ जानल जाइत अछि। ई थिक युवती महिला द्वारा युवक पुरुषक प्रति सर्वतन्मयकारी आत्मोत्सर्ग, जकरा लेल हृदय एवं आत्मासँ—आधुनिक भारतीय संभाषण शैलीमे अपन तन, मन, धनसँ—ओ अपनाकेँ समर्पित कऽ चुकल अछि। ई कान्ता-प्रेम वा दाम्पत्य प्रेम मध्यकालीन हिन्दूसाधनाक वा प्रेम द्वारा ईश्वरानुभूतिक अत्यन्त प्रसिद्ध भावाभिव्यक्ति थिक। युवक प्रेमी-प्रेमिकाक बीचक पार्थिव प्रेमक निश्छल स्वीकृति, एहि दिव्य प्रेमक, दुर्बोध प्रेम-मार्गक जे ईश्वर धरि पहुँचादैत अछि, प्रतीकक निर्माण करैत अछि। जेना एकगोट मध्यकालीन वैष्णव श्लोकमे कहल गेल अछि:

"युवतीनां यथा यूनि, यूनाञ्च युवतौ यथा।
मनोऽभिरमते नित्यं, मनोऽभिरमतां त्वयि॥"

ठीक ओहिना जेना युवतीक मन सर्वदा युवकमे आनन्द प्राप्त करैत अछि आ' युवकक युवतीमे, तहिना हमर मन अहाँमे आनन्द प्राप्त करओ।

प्राचीन भारतमे ई धारणा सर्वप्रथम वृहदारण्यक उपनिषद् ४-३-२१ मे (एक गोट अनुच्छेदमे जे अति प्रसिद्ध अछि) भेटैत अछि: "यथा प्रियया स्त्रिया सम्परिष्वक्तो न बाह्यं किञ्चन वेद न आन्तरम्, एवमयं पुरुषः प्राज्ञेनात्मना सम्परिष्वक्तो न बाह्यं किंचन वेद वान्तरम्—तद् वा अस्य एतद्

आप्तकामम् आत्म-कामम् अ-कामं रूपं शोकन्तरम् : प्रिय स्त्री द्वारा आलिंगित पुरुषकेँ जेना कोनो तरहक वाह्य वा आन्तर भेदज्ञान नहि रहि जाइत अछि तहिना प्राज्ञ आत्मा द्वारा आलिंगित परमात्माकेँ सेहो ओही तरहेँ वाह्य अथवा आन्तर कोनो प्रकारक भेद-ज्ञान नहि रहैत अछि। वस्तुतः वैह परमात्माक वास्तविक रूप थिक जाहिमे ओकर वांछाक पूर्ति होइत अछि, जाहिमे ओकर वांछा थिक आत्मा, जाहिमे ओ इच्छारहित ओ शोकरहित रहैत अछि।

पुरुष-स्त्री वीचक पार्थिव, दैहिक प्रेम, ओहि प्रेम-प्रतीकक रूपमे, जाहि प्रेमक अनुभव मनुष्य ईश्वरक लेल करैत अछि (आ' जेना मनुष्यक विश्वास अछि, ईश्वर सेहो मनुष्यक लेल करैत छथि) सम्पूर्ण विश्वमे व्यापक रूपेँ मान्य अछि। हमरालोकनि एकर सन्धान चीनक कन्फूशस-धर्ममे तथा टाओ धर्ममे (यथा चिउ-यूअन, २०० ई० पू० रचित धार्मिक-काव्यात्मक गीत जे नओटा संबोध-गीति-Nine odes-क नामेँ प्रसिद्ध अछि, संग-संग टाओ धर्मक रहस्यवादी परम्परामे पवैत छी। हमरालोकनि एकरा हिब्रूमे पवैत छी, जेना सोलोमनक सांग आफ सांग्स-Song of Songs-मे। परवर्त्ती इसाइ रहस्यवादमे, हमरा सभकेँ (विभिन्न ढंगे हिब्रू सांग आफ सांग्सक व्याख्या करबाक मध्यकालीन धर्मोपदेशक समक प्रयासक अछैतहु) इएह धारणा भेटैत अछि जाहिमे जीवात्माकेँ महान प्रेमी ईसामसीहक वा परमेश्वरक वधू वा प्रेयसी मानल गेल अछि। आ' इस्लामी रहस्यवादक तशव्वुफ वा सूफीधर्म, सेहो एहि धारणासँ परिपूरित अछि जाहिमे जीवात्माकेँ सत्रिय प्रेमी, पुरुष, आशिक आ' परमात्माकेँ प्रमुख प्रेमिका वा आशिकक पत्नी, माशूकक रूपमे मानल गेल अछि। वा परमात्माकेँ नव-किशोरक रूपमे सेहो कल्पना कैल गेल अछि जे आशिकक पुरुष-प्रेमी थिक।

आत्मा-परमात्माक सम्बन्धकेँ एहि तरहेँ देखलासँ, दैहिक वा सांसारिक प्रेमकेँ दैवी प्रेमक प्रतीक मानबाक वैष्णव-व्याख्याकेँ हृदयंगम करय पड़त आ' स्वीकार करय पड़त। ई अवश्य जे एहि व्याख्याक तहमे पर्याप्त 'दर्शन' अछि जे संस्कृतमे एवं आधुनिक भारतीय भाषा सभमे अछि। एहि तरहेँ, हमरा लोकनिकेँ प्रेमक, जाहि रूपमे ओ गीतगोविन्दमे वर्णित अछि, एकटा आध्यात्मिक व्याख्या गीतगोविन्दक अंग्रेजीमे एकगोट अधुनातन अनुवादमे प्राप्त होइत अछि।

१४. जयदेव—परम्परागत धार्मिक दृष्टिकोण तथा आधुनिक यथार्थवादी दृष्टिकोण

जयदेव एवं हुनक गीतगोविन्द पर अत्यन्त विशद ओ व्यापक प्रबन्ध, बंगलामे, पं० हरेकृष्ण मुखोपाध्याय (मुखर्जी) साहित्यरत्न, पी-एच० डी०, जे वैष्णव साहित्य ओ दर्शनक क्षेत्रमे बंगालक विशिष्ट विद्वान ओ लेखकमे सँ छथि, द्वारा लिखित अछि (हुनक **कवि जयदेव ओ श्री गीतगोविन्द**, कलकत्ता. चतुर्थ संस्करण, अग्रहायण, बंगला सन् १३७२ = १९६५ ई०, लेखक द्वारा 'शारदा कुटीर', ग्राम एवं डाकघर कुड़यिा, जिला वर्दमानसँ प्रकाशित: पृष्ठ-२७२ + १६० = ४३२)। एहि विद्वत्तापूर्ण कृतिमे २७२ पृष्ठक भूमिका अछि जाहिमे वैष्णव प्रेमदर्शनक अध्ययन सहित जयदेव एवं हुनक कृतिक प्रत्येक पक्षक विवेचन कैल गेल अछि आ' एहि विषय पर वैष्णव रूढ़िनिष्ठता जे किछु विचार कैलक अछि से सभटा एहि पुस्तकमे उपलब्ध अछि। द्वितीय भाग, पृष्ठ १—१६०, मे पुजारी गोस्वामीक **बालबोधिनी** नामक भाष्य सहित सम्पूर्ण काव्यक सुसम्पादित पाठ अछि। पुजारी गोस्वामी बंगाली वैष्णव ओ भक्त चैतन्य दासक अपर नाम छलन्हि जे सोलहम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे वृन्दावनमे निवास करैत छलाह। अतः ओ सोलहम अर्थात् महत्वपूर्ण शताब्दीक विशिष्ट वैयक्तिक चरित्र छलाह, जाहि समयमे गौड़ीय वा बंगाल वैष्णव पद्धतिक साहित्य ओ दर्शन अपन समृद्धिक उत्कर्ष पर छल।

गीतगोविन्दमे 'लौकिक प्रेम'क उदात्तीकरण 'दिव्य-प्रेम' मे भेल अछि: ई काव्यक प्रत्येक अध्येताक, भनहि ओ भारतीय होथु वा पाश्चात्य देशक, सामान्य दृष्टिकोण अछि। अधिकतम विद्वान जयदेवकेँ संस्कृतक महाकविक रूपमे पर्याप्त मान्यता देलन्हि अछि। संस्कृत व्याकरण पर प्रकाशित अधुनातन पुस्तक, यूनिभरसिटी आफ अलबामा, यू० एस० ए०, १९७२ (ओकर अंग्रेजी अनुवादमे), जकर लेखक वियनाक प्रो० मैनफ्रेड मेहोफर (जे सद्यः प्रकाशित इटिमोलोजिकम डिक्सनरी आफ संस्कृतक लेखक छथि) छथि,

तकर अन्तमे संस्कृत साहित्यक तीन गोट उदाहरण देल गेल अछि जाहिमे सँ पहिल **ऋग्वेदक** थिक, दोसर **महाभारतक** नल-दमयन्तीक कथासँ तथा तेसर **गीतगोविन्दक** एकटा गीतक किछु पंक्ति सभ अछि। संस्कृतक अधिकतम यूरोपीय विद्वान **गीतगोविन्दक** मुक्तकण्ठेँ प्रशंसा कैलन्हि अछि, किछु गोटे और किछु नहि त एकर शाब्दिक संगीत तथा एहिमे जे नारी-सौन्दर्य ओ प्रेमक उल्लास अछि एवं परमात्माक लेल जीवात्माक लालसा, संग-संग प्रकृति-चित्रण एहि सभ कारणेँ एकर संतुलित प्रशंसक रहलाह अछि।

पूर्व-निर्देशित जयदेव विषयक मनमोहन चक्रवर्तीक निबन्धक अतिरिक्त पुस्तक विषयक विस्तृत विवरण एवं अन्य टिप्पणी समेत जयदेवक अत्यन्त विशद अध्ययन एम० विन्तर्नित्स रचित **भारतीय साहित्यक इतिहास**, भाग —३, खंड—१ मे प्राप्त अछि (एहि वृहत् कृतिक प्रथम भाग मूल जर्मनमे १९०७ मे प्रकाशित भेल : सम्पूर्ण प्रथम ओ द्वितीय भागक अंग्रेजी अनुवाद, जे मिसेज एस० केतकर कैलन्हि, कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित भेल, भाग—१, १९२७—भूमिका, वेद, राष्ट्रीय महाकाव्य, पुराण एवं तंत्र : तथा भाग—२, १९३३—बौद्ध साहित्य एवं जैन साहित्य : भाग—३, खंड—१, श्रेष्य संस्कृत साहित्य—मूल जर्मन संस्करण १९२२मे प्रकाशित भेल, डा० सुभद्र झा कृत अंग्रेजी अनुवाद १९६३ मे मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, वाराणसी एवं पटना द्वारा प्रकाशित भेल : सुभद्र झाक अंग्रेजी अनुवादमे जयदेवसँ सम्बद्ध अंशक लेल द्रष्टव्य पृष्ठ १४२-१४८)। विन्तर्नित्सक इतिहासमे जयदेवक प्रसंगमे ग्रन्थेतिवृत्त एवं अन्यान्य निर्देश अत्यन्त मूल्यवान अछि। अधिकांश यूरोपीय संस्कृतज्ञ सदृश विन्तर्नित्स जयदेवक शाब्दिक संगीतक मोहमे पड़ि गेलाह अछि आ' ओ एकर अतिशय प्रशंसक छथि। ओ जयदेवक गीत क अंशकेँ रोमन प्रतिलेखन द्वारा उद्धृत कय हुनक सुमधुर काव्यक उदाहरण देलन्हि अछि। **गीतगोविन्दक** विषयमे विन्तर्नित्सक चरम निष्कर्ष एहि रूपेँ अछि—"ई सत्य जे एहि काव्यक धार्मिक विशेषता छैक तथा एकर रचयिताक मतानुसार एहि काव्यक समस्त शृंगारिकता भगवान कृष्णक भक्तिक अंशमात्र थिक। ई सत्य जे जयदेव भारतक सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाशाली कविमे सँ छथि। (बंगाल एवं भारतक अत्यन्त प्रमुख साहित्यालोचक एवं लेखक, जे लोकनि भक्तिक राधाकृष्णोपासनामे आसक्त नहि छथि, एहि विचारसँ कनेको सहमत नहि छथि—सुनीति कुमार चटर्जी)। तथापि ई आश्चर्यक विषय जे यद्यपि कवि एहि काव्यक रचना

एतेक आलंकारिक ओ कृत्रिम ढंगे कैलन्हि तथापि ओ एहिमे एतेक अधिक मात्रामे भाव ओ शृंगाररसक सम्मिश्रण कऽ सकलाह : संगहि भाषामे अनुप्रासक सन्निवेश कैलन्हि जे बहुधा विशुद्ध संगीतक रूपमे हमरा लोकनिक कानमे अनुगुंजित होइत अछि। ई कोन आश्चर्यक विषय थिक जे भारतमे एहि काव्यकेँ असाधारण लोकप्रियता प्राप्त छैक जखन कि भारतक बाहरो एकर प्रशंसकक कहियो अभाव नहि रहल अछि। अनुवादमे एकर भाषाक सौन्दर्यकेँ समाहित करब अत्यन्त कठिन अछि, अतः अनुवाद द्वारा एहि काव्यक रसास्वादन केवल अंशतः कैल जा सकैत अछि। डब्ल्यू० जोन्स द्वारा त्रुटिपूर्ण अंग्रेजीमे जयदेवक अनुवादक उद्धरणेटा गेटेक हृदयमे आश्चर्यक भाव जगा देलक।

मुदा प्रशंसाक थोड़ बहुत एही पद्धति पर ए० बेरिएडेल कीथक कथन हुनक **संस्कृत साहित्यक इतिहास**, आक्सफोर्ड यूनिभरसिटी प्रेस, प्रथम संस्करण १९२० (छओटा आफसेट पुनर्मुद्रण सहित, अन्तिम १९६६ क), पृष्ठ १९०-१९८ मे अछि। कीथ **गीतगोविन्दकेँ** 'उत्कृष्ट रचना' घोषित करैत छथि आ' कहैत छथि जे "संस्कृत साहित्यमे अन्तिम महान अभिधान" जे अछि से जयदेवक। ओ काव्यक विश्लेषण तथा उत्साहपूर्ण संवर्द्धन करैत छथि, आ' **गीतगोविन्दक** तीन टा गीतसँ अँग्रेजी अनुवाद सहित रोमन लिपिमे उद्धरण दैत छथि।

आधुनिक दृष्टिकोणसँ, संस्कृत साहित्यक कृतिक रूपमे, अंग्रेजीमे जयदेवक **गीतगोविन्दक** अत्यन्त **युक्तिनिष्ठ** अध्ययन, स्वर्गीय प्रोफेसर सुशील कुमारे डे द्वारा हुनक **संस्कृत साहित्यक इतिहास** : गद्य, काव्य, नाटक : कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित, १९४७, पृष्ठ ३८८-३९८ मे कैल गेल अछि। एहिमे हमरा लोकनिकेँ **गीतगोविन्दक** तथा समस्त अभीष्ट साहित्यक सन्दर्भमे सम्पूर्ण समस्याक व्यावहारिक विचार-पद्धति प्राप्त होइत अछि जे तथ्यपूर्ण रहितहु पर्याप्त प्रशंसात्मक अछि, तथा एहिमे **गीतगोविन्दक** सभ महत्वपूर्ण अंग्रेजी रूपान्तरक उल्लेख भेटैत अछि। मूल्यांकन निष्पक्ष एवं सराहनीय अछि आ' ओ अतिशयोक्तिसँ मुक्त अछि।

गीतगोविन्दक अंग्रेजी रूपान्तर सभमे सर्वप्रथम उल्लेखनीय अछि सर विलियम जोन्स द्वारा ओकर आद्य रूपान्तर (एसियाटिक रिसर्चेज, जिल्द—३, १७९६) आ' पुनः सर एडविन आरनोल्ड द्वारा कैल गेल रूपान्तर **द इण्डियन**

सांग आफ सांग्स, १८६१, 'अनेक संस्करणमे प्रकाशित)। ई दुनू अनुवाद यथातथ्य नहि अछि। अंग्रेजीमे दू गोट अधुनातन अनुवाद सम्प्रति उपलब्ध अछि। एकटा अछि लंकाक चित्रकार एवं लेखक जार्ज कूट द्वारा **(श्री जयदेव'स गीतगोविन्द—द लव्स आफ कृष्ण एण्ड राधा,** लेखक द्वारा निदर्श-चित्र सहित : भारतीय संस्करण, कुतुब, बम्बई १९४७)। ई पूर्णतया अविकल तथा सर्वथा सन्तोषजनक अछि। दोसर अनुवाद मोनिका बर्माक, कलकत्ता, १९६८, पी० लालक राइटर्स वर्कशौपसँ। एहि अनुवादमे भूमिका ओ टिप्पणी देल गेल अछि मुदा विशद व्याख्याक अभाव अछि। एफ० रूकेर्टक जर्मन अनुवादक विश्वभरिमे बहुत अधिक प्रशंसा कैल गेल अछि (प्रथम प्रकाशन १८२९, पुनः १८३७ मे)।

१५. गीतगोविन्द एवं मध्यकालीन भारतीय चित्रकला

मध्यकालीन भारतीय चित्रकला पर, उत्तर ओ दक्षिण भारतमे दूनू ठामक ओकर विभिन्न पद्धति पर, **गीतगोविन्दक** बड़ बेशी प्रभाव पड़ल अछि। तत्सामयिक उत्तर-भारतीय कलाक शृंगारिक संरचना—जाहि रूपमे पाल ओ सेनकालीन मूर्त्तिमे, भुवनेश्वर, पुरी तथा कोणार्कक मूर्त्तिमे, एकर अतिरिक्त दक्कनक उत्तरकालीन राष्ट्रकूट एवं चालुक्य कलामे अछि, **गीतगोविन्द** दृश्य एवं विशिष्ट स्थलक सर्वोत्तम प्रतिकृति ओ उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। एहि काव्यक विषय ओ निवेश गुजरात ओ राजस्थानक, उत्तर भारतक (वृन्दावन ओ वाराणसी) तथा कांगरा, चम्बा, मण्डी, बसौली एवं अन्य क्षेत्र, एवं नेपाल सहित हिमालय प्रदेशक किछु अत्यन्त उत्कृष्ट चित्र सभकेँ प्रभावित कैलक अछि। हमरालोकनिकेँ उड़ीसा, बंगाल ओ आसामक चित्रकला-पद्धतिकेँ तथा आन्ध्रदेशक, कर्णाटकक, केरलक, एवं तमिलनाडुक चित्रकला-पद्धतिकेँ सेहो ध्यानमे राखक अछि। ललित-कला अकादेमी (साहित्य अकादेमीक भगिनी संस्था), कतिपय **गीतगोविन्द** तथा अन्य राधा-कृष्ण-चित्रावलीक रंगीन उदाहरण सहित उत्तम पुस्तिका सभक प्रकाशन कऽ चुकल अछि। भारतीय कला पर **गीतगोविन्दक** प्रभावक अध्ययन, निश्चित रूपेँ, चौदहम शताब्दीसँ लऽ कऽ बाद धरिक, भारतमे कलाक अत्यन्त उर्वर कालकेँ आवृत करत। आनन्द केन्टिश कुमार स्वामीक पथ-प्रदर्शक कृतिक अतिरिक्त, एम० एस० रन्धवा एहि दिशामे उल्लेखनीय कार्य कैलन्हि अछि (खास कऽ राजपूत एवं हिमालय कला पर)।

हिन्दू मूर्त्ति-विज्ञान एवं राधा-कृष्ण उपासनाक विषयमे अन्तक खण्ड सेहो द्रष्टव्य।

१६. गीतगोविन्दक दूटा गीत, अनुवाद सहित

हमरालोकनि जयदेवक श्लोकक, विशेषतः चोबीसो गीतक संगीतसँ मुग्ध छी, आ' लोक जे असम्भव अछि तकरो प्रयास करबाक लेल प्रलोभित होइत अछि अर्थात् पाठककेँ हुनक श्लोकक विशेषताक अनुभूति करैबाक लेल। मुदा सामान्य पाठक, जे अपन चेतनाकेँ एहि पद सभक आध्यात्मिक वा दैवी लक्षणक विषयमे, रूढ़िनिष्ठ वैष्णव मूलादर्शक वातावरणमे निमग्न नहि कऽ देने छथि, ओ जकरा कविताक शब्दावलीमे निश्छल एवं मुक्त तथा पूर्ण एवं विशद अभिव्यक्ति कहवैक ताहिसँ, जेना खजुराहोक मन्दिर-समूहक मौलिक एवं मर्मस्पर्शी, एकर संग-संग सुन्दर शृंगारिक शिल्पकलासँ, आ' उड़ीसाक मन्दिर-समूहक जेना पुरी एवं कोणार्कक मन्दिर सभक शिल्पकला सँ, विशेष आनन्दक अनुभव नहि कऽ सकैत अछि। सामान्यतः अनुवाद सभ सार्वभौमिक उत्साहक सृष्टिमे असफल रहत कारण जे एहि विषयमे रुचिक भिन्नता अछि।

हम किछु अति मधुर पदक रूपान्तर देवासँ विरत रहलहुँ अछि। एहन पदमे भाषाक शैलीमे पैघ-पैघ छन्द अछि आ' खास कऽ विषय-वस्तु लऽ कऽ किंचित कठिन बुझाइछ। हम दूटा मात्र लघु गीत देल अछि जे हम अनुभव करैत छी जे सभ प्रकारक पाठककेँ प्रमुदित करत। **गीतगोविन्दक** एहि दूनु गीतकेँ अनुवाद सहित देल जा रहल अछि।[1]

१. गीत-२, सर्ग-१ : विष्णुक दशावतारक दोसर प्रार्थना :

श्रित-कमला-कुच-मण्डल धृत-कुण्डल
कलित-ललित-वनमाल ॥१॥
जय जय देव हरे (ध्रु०)

---

१. मूलग्रन्थक अंग्रेजी अनुवादक रूपान्तर नहि कय प्रस्तुत मैथिली रूप कविचूड़ामणि पं० काशीकान्त मिश्र 'मधुप' कृत गीत-गोविन्दक अप्रकाशित मैथिली अनुवादसँ साभार गृहीत अछि।—अनुवादक।

श्री-उरोज-अम्भोज निहित-कर
गोल अमोल-ललित-कुण्डल-धर ।
धृत-रसाल-बनमाल-मनोहर
जय जय देव हरे (ध्रु०)

दिनमणि-मण्डल-मण्डन भव-खण्डन
मुनि-जन-मानस-हंस ।।२।।

रवि-मण्डल-मध्यस्थित कायक
भीषण-भव-भय भस्म विधायक
मुनि-मानस-मानस-मराल वर
जय जय देव हरे ।।

कालिय-विषधर-गञ्जन जन-रञ्जन
यदु-कुल-नलिन-दिनेश ।।३।।

फणि-मणि-कालिय-मानक भञ्जक
गति - विभूषित-जन-चित-रञ्जक
मानुरूप, कुल यदुकुल - कञ्जक
जय जय देव हरे ।।

मधु मुर-नरक-विनाशन गरुड़ासन
सुर-कुल-केलि-निदान ।।४।।

मधु मुर नरक-दानवक नाशक
गरुड़-पीठ चढ़ि त्रिभुवन शासक
सुर-समुदाय-विनोद - विकासक
जय जय देव हरे ।।

अमल-कमल-दल-लोचन भव-मोचन
त्रिभुवन-भवन-निधान ।।५।।"

विमल-कमल-दल-उपमित-लोचन
विदित विश्व-बन्धनक विमोचन
त्रिभुवन-भवन-वास, कृत-रोचन
जय जय देव हरे ।।

जनक-सुता-कृत-भूषण जित-दूषण
समर-शमित-दशकंठ ॥६॥

सीता-सम्पादित-शुभ-भूषण
रणमे निर्जित-खल-खरदूषण
अवधवास कृत-दशमुख-वध धन
जय जय देव हरे ॥

अभिनव-जलधर-सुन्दर धृत-मन्दर
श्री-मुख-चन्द्र-चकोर ॥७॥"

नवके सजल जलद सन सुन्दर
निधि-मन्थन खन धृत-गिरि-मन्दर
रमा-वदन-विधु हित चकोर-वर
जय जय देव हरे ॥

तव चरणे प्रणता वयमिति भावय
कुरु कुशलं प्रणतेषु ॥८॥

तुअ पद पङ्कजमे प्रणाम-रत
हम सब, से विचारि शरणागत-
केर कुशल करु दीन-दया-व्रत,
जय जय देव हरे ॥

श्री जयदेव कवेरिदं कुरुते मुदम्
मङ्गलमुज्ज्वल-गीति ॥९॥

श्री जयदेव-कविक ई निर्मित,
गीत मोद-मंगल-दायक नित
जगमगाय, श्री 'मधुप' अनूदित
जय जय देव हरे ॥

सर्ग-१क गीतसंख्या-१ सेहो विष्णुक दशावतारक स्तुतिपरक गीत थिक आ' ओहिमे दशो अवतारक नामोल्लेख कैल गेल अछि। वर्त्तमान गीत, गीतसंख्या-२ मे सभ अवतारक नामोल्लेख नहि अछि, एहिमे केवल अनियमित निर्देश अछि। एहि सन्दर्भमे एकटा वस्तु देखल जा सकैत अछि जाहि दिश खास कऽ हमर ध्यान भारतक भूतपूर्व राष्ट्रपति आ' हिन्दूधर्मक

२. गीतसंख्या-१०, सर्ग-५, राधासँ कृष्णक दशाक वर्णन :

वहति मलय - समीरे मदनमुपधिनाय,
स्फुटति कुसुम-निकरे विरहि-हृदय-दलनाय ॥१॥
सखि सीदति तव विरहे वनमाली (ध्रु०)

मदन - वेदन वढ़बक हित रे
वह मलय - समीर,
विरहिक हिय - दारक फुट रे
सव सुम वनि तीर।
एहन समय मह मोहन रे,
तुअ पावि वियोग,

ओ संस्कृतिक महान व्याख्याता सर्वपल्ली राधाकृष्णन आकृष्ट कैलन्हि। रूढ़िनिष्ठ ब्राह्मणवादी आकलनमे वुद्ध विष्णुक अवतारक रूपमे समादृत छथि। मुदा ब्राह्मणवादी रूढ़िनिष्ठता वुद्धक व्यक्तित्वक महानताकेँ बुझवाक चेष्टा नहि कैलक वा वुझवामे क्षम नहि भेल – ओ हुनका केवल भ्रान्तिक प्रचारक वुझलक जे वैदिक मत एवं बलिकेँ स्वीकार नहि कैलन्हि। विष्णुक अवतारक रूपमे वुद्धक आविर्भाव मूर्ख एवं अज्ञानी लोककेँ एहन सिद्धान्तक प्रति प्रवृत्त करव छल जे वैदिक धर्मक यज्ञ ओ बलिक विरोधी छल, जाहिसँ एहि तरहक विरोधी लोकनि वैदिक धर्मक समर्थक ईश्वरक कोपभाजन भऽ सकथि। मुदा **गीतगोविन्द** मे दू ठाम, दूनू सर्ग-१ मे, जयदेव केवल वुद्धक चरित्रक व्यावहारिक पक्षकेँ तथा हुनक अहिंसाक सिद्धान्तकेँ लक्षित करवाक प्रयास कैलन्हि अछि। वुद्ध सव जीवक प्रति अपन प्रेमसँ प्रेरित छलाह, ओ मात्र अवैदिक चिन्तक नहि छलाह। हुनक अहिंसाक सिद्धान्त वैदिक पशुवलिमे निहित क्रूरताक प्रति हुनका विराग उत्पन्न कऽ देलक आ' ओ वेदक केवल ओहि अंशक भर्त्सना कैलन्हि जे **पशु आलंभन** वा पशुवलिक समर्थन करैत छल। जेना प्रो० राधाकृष्णन हमरा ध्यानमे आनलन्हि अछि, कमसँ कम **गीतगोविन्दक** एकगोट प्राचीन भाष्यकार द्वारा सेहो एहि सम्वन्धमे इंगित कैल गेल अछि। ई सभ जीवक प्रति प्रेम ओ दयाक आश्रयस्थलक रूपमे वुद्धक व्यक्तित्वक वास्तविक महानताकेँ एहि प्रेमाख्यानमे सेहो वुझवाक जयदेवक मनःस्थितिक एकटा नव एवं पर्याप्त आनन्द-प्रद पक्षकेँ उपस्थित करैत अछि।

सखि ! सदिखन छथि सोदित रे
से कर्मक योग ॥

दहति शिशिर-मयूखे मरणमनुकरोति,
पतति मदन-विशिखे विलपतिविकलतरोऽति ॥२॥

किरण कलेशक दै छनि रे
मरणैक कलेश,
विद्ध मदन - शर विलपथि रे
भऽ विकल विशेष ॥

ध्वनति मधुप-समूहे श्रवणमपिदधाति ।
मनसि वलित-विरहे निशि निशि रुजमुपयाति ॥३॥

कान मुनथि, जैं की हो रे
अलि - कुल - गुञ्जार ।
विरह - मथित - मन निशि भरि रे
संतप्त अपार ॥

वसति विपिन-विताने, त्यजति ललित-धाम ।
लुठति धरणि-शयने, बहु विलपति तव नाम ॥४॥

सघन विपिन बिच बसइछ रे
तजि भवन ललाम ।
महि - निपतित विलपथि कत रे
रटि रटि तव नाम ॥

भणति कवि-जयदेव विरह-विलसितेन ।
मनसि रभस-विभवे हरिरुदयतु सुकृतेन ॥"

हरिक वियोग विलासे रे
वन्दित असमान ।
कवि जयदेवक कहितन्हि रे
विभु चरित महान ॥
भक्त जनक आनन्दित रे
मन मे भगवान ।
होथु उदित कृत पुण्ये रे
सुनि 'मधुप'क गान ॥

१७. राधा-कृष्ण-उपासना तथा हिन्दू मूर्त्ति-विज्ञान

राधा-कृष्णक चित्र, जकरा एहि जयदेव विषयक पुस्तकामे मुखचित्रक रूपमे पुनः प्रस्तुत कैल गेल अछि, दैवी प्रेमी-प्रेमिकाक अद्यावधि प्राप्त प्राचीनतम मूर्त्ति-निरूपण थिक। ई उत्तर-मध्य बंगालक राजशाही जिला-तर्गत पहाड़पुरक स्तूप ओ मन्दिरक भग्नावशेषसँ लेल गेल अछि आ' ई छठम-सातम शताब्दीक थिक। दूनू मूर्त्तिक माथकेँ घेरि कऽ जे ज्योति-र्मण्डल अछि से दूनूक दैवी सत्ताकेँ द्योतित करैत अछि। ई मूर्त्ति कृष्ण विषयक कतिपय समान उत्कीर्ण मूर्त्तिक संग पाओल गेल अछि। कृष्ण छरहर, सुदर्शन युवकक रूपमे चित्रित कैल गेलाह अछि।

जयदेवसँ, जे राधाकृष्णक प्रेम पर पहिल महाकाव्यक रचना कैलन्हि, प्रायः चारि-पांच सय वर्ष पूर्व, मूर्त्तिकलाक ई आदर्श बंगालमे निर्मित भेल आ' भारतीय कलामे सर्वाधिक मनोहरमेसँ अछि। समयानुसारेँ एकर बादक अछि कृष्ण ओ राधाक प्राचीन (तमिलमे कण्णन एवं नप्पिन्नै) शौर्यमय प्रतिकृति, जे ओहि विशाल उत्कीर्ण मूर्त्तिमे अछि जाहिमे कृष्ण गोवर्द्धन धारण कैने चित्रित छथि—ई मूर्त्तिकलाक भव्य नमूना थिक जाहिमे राधा हुनक वाम भागमे छथिन्ह आ' राधाकेँ एकटा गोपी अवलम्ब देने छथिन्ह। (ई तमिलनाडुक महाबलीपुरमक प्रस्तरमूर्त्तिगे सँ एकटा थिक—समय सातम-आठम शताब्दी।)

कृष्णोपाख्यानकेँ चित्रित करैत किछु अन्य दृश्य, पांचम-छठम शताब्दीक, उत्तर-भारतमे प्राप्त गुप्तकालक किछु उत्कीर्ण मूर्त्तिमे अछि। मुदा राधाकेँ कृष्णक संग बड़ बादमे चित्रित कऽ देखैत छियैन्ह। कृष्णक प्रेयसीक रूपमे राधाक उपासना लगैत अछि जे प्रायः बहुत दिनक बाद चलि कऽ प्रतिष्ठित भेल : पहिल सहस्राब्दीक अन्तिम शताब्दीमे, ओना त एहि उपासना-पद्धतिक सूत्रपात किछु सहस्राब्दी पहिनहिसँ होइत अछि। एही सन्दर्भमे, विशिष्ट

पुरातत्वविद् एवं इतिहासकार राखालदास बनर्जीक अग्रिम उल्लिखित सम्मति प्रसंगोपयोगी हैत, जे राधा-कृष्ण उपाख्यान पर कला ओ साहित्य दूनूमे किंचित कालानुक्रम टिप्पणीक विन्यास सेहो करैत अछि। (इस्टर्न इण्डियन स्कूल आफ मेडिएभल स्कल्पचर, लेखक आर० डी० बनर्जी, एम० ए०, ९६ प्लेट सहित; आरक्योलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया, न्यू इम्पिरियल सिरीज—जिल्द XLVII, गवर्मेन्ट आफ इण्डिया, देलही, मैनेजर आफ पब्लिकेशन्स, १९३३, पृष्ठ-१२७मे) :

"यद्यपि बंगाल ओ बिहार प्रदेशक विभिन्न भागसँ ११म-१२म शताब्दीक चतुर्भुज विष्णुक विभिन्न प्रकारक हजारो मूर्ति प्राप्त भेल अछि, राधा-कृष्णक युगल मूर्तिक केवल एकटा नमूना भेटल अछि जकरा दृढ़तापूर्वक पूर्वीय पद्धतिक—ओकर सुदीर्घकालीन अस्तित्वमे—निर्धारित कैल जा सकैत अछि। (एहि पुस्तकमे पहाड़पुरक मूर्त्तिक जे प्रतिकृति देल गेल अछि से १९३३ धरि प्रकाशमे नहि आयल छल—सुनीति कुमार चटर्जी।) एहि नमूनाक प्राप्तिस्थान अज्ञात अछि मुदा ई बिहारक [ए० एम०] ब्राडलेक संग्रहक थिक आ' एगारहम शताब्दीक नमूना थिक (पूरक सूची, पृष्ठ ९६, संख्या ३८३३।) अतः एगारहम एवं बारहम शताब्दीमे कृष्णभक्ति अत्यन्त अल्प समुदाय द्वारा अनुसृत छल। हमरालोकनि, पूर्वीय विचार-सम्प्रदायमे राधा-कृष्णक युगलमूर्त्तिक अत्यधिक अभावटा नहि पबैत छी, अपितु केवल कृष्णहुक कोनो मूर्त्ति तेरहम शताब्दीसँ पूर्वक, बंगाल वा बिहारमे कतहुसँ प्राप्त नहि भेल अछि। भारतक उत्तर-पूर्वीय प्रदेशमे राधा-कृष्ण उपासना-पद्धतिक लोकप्रियता महान सुधारक चैतन्यक अभ्युदयक समयसँ दृष्टिगोचर होइत अछि। पन्द्रहम शताब्दीक प्रारम्भ सँ बंगाल एवं बिहारक अधिकांश ब्राह्मण-मूर्त्ति धातु ओ पाथर दुनूमे वा त लिंग एवं दुर्गा वा कालीक मूर्त्ति अछि वा कृष्ण अथवा राधा-कृष्णक मूर्त्ति अछि। एहि कलावधिमे पाथर वा धातु कोनोमे विष्णुक मूर्त्तिक सर्वथा अभाव अछि। अतः बारहम शताब्दीसँ पन्द्रहम शताब्दी धरिक उत्तर-पूर्वी भारतक वैष्णव सम्प्रदायक इतिहासमे एकटा दोष अछि, जकर समाधानक लेल मूर्त्तिकला कोनो सामग्री नहि प्रदान कऽ सकैत अछि।

१८. गीतगोविन्दक गीतमे छन्द ओ संगीत

गीतगोविन्दक वर्णनात्मक अंश ओ गीत दूनूमे प्रयुक्त छन्दक अति संतोप-जनक विश्लेपण डा० सुधीभूपण भट्टाचार्य द्वारा कैल गेल अछि जे डा० हरे कृष्ण मुखर्जीक उपरि-निर्दिष्ट जयदेव विषयक बंगला पुस्तकमे प्राप्त अछि।[1] वर्णनात्मक अंश श्रेण्य संस्कृत छन्दमे अछि, मुदा जेना सुधीभूपण भट्टाचार्य लक्ष्य कैलन्हि अछि, एहि संस्कृत श्रेण्य छन्द सभ पर अपभ्रंश छन्द सभक प्रभाव अछि।

पद वा गीत सभ अपभ्रंश एवं अवहट्ठ तथा प्रारंभिक भाषा (नव्य भारतीय-आर्य) क मात्रावृत्तमे अछि आ' एकर मात्रा ओ चरणक विशद विश्लेपण एवं वर्गीकरण डा० हरेकृष्ण मुखर्जीक पुस्तकमे उपलब्ध अछि। एहि विषय पर, जे एक प्रकारसँ रचनात्मक अछि, विचार करव आवश्यक नहि अछि।

जयदेवक पदावली आदिएसँ पराशर सदृश हुनक मित्रलोकनि द्वारा गाओल गेल। एहि प्रसंगमे ओ स्वयं अपन काव्यमे कहने छथि। **शेक शुभोदयसँ** हमरा लोकनिकेँ जयदेव एवं हुनक पत्नी पद्मावती दूनूक संगीत-पटुताक सूचना भेटैत अछि। जयदेवक गीतावली हजार वा आठ सय वर्ष पूर्व आर्य-भाषी भारतमे प्रचलित अन्त्य-मध्यकालीन हिन्दू संगीत-पद्धतिमे गाओल जाइत छल, जकरा हमरा लोकनि विशेष विकसित रूपमे, अकबर बादशाहक समयक (१६म शताब्दी) हिन्दुस्तानी वा उत्तर भारतीय संगीतमे, जे तानसेन द्वारा चरम उत्कर्षकेँ प्राप्त कैलक, **ध्रुव-पद** वा **ध्रुपदक** परंपरामे आ' कर्नाटक वा दक्षिण-भारतीय संगीतक **पदम** वा **कीर्त्तनम** परम्परामे पबैत छी, जकर सभसँ पैघ प्रवर्तक छलाह १७म शताब्दीमे कर्नाटकक पुरन्दर दास तथा १९म शताब्दीमे आन्ध्रक त्यागराज जे तमिलनाडुमे बसि गेल छलाह। तावत धरि लयकेँ ताल सहित विभिन्न राग ओ रागिनीमे वर्गीकृत करबाक

---

१. पृष्ठ ५४।

भारतीय पद्धति नीक जकाँ स्थापित भऽ चुकल छल। ओहिमे प्राचीन अर्थात् अपन प्रचलित नाम सहित प्रारम्भिक-मध्यकालीन राग ओ रागिनी सभ छल जे हमरा लोकनिकेँ जयदेव द्वारा **गीतगोविन्दमे** प्रत्येक पदक ऊपरमे देल गेल भेटैत अछि। ई सभ हिन्दुस्तानी संगीतक श्रेण्य राग सभ थिक जकरा हमरा लोकनि केवल जयदेवमे नहि, अपितु संगीतविषयक प्राचीनतम संस्कृत प्रबन्ध (११क शताब्दीक उपरान्त) मे सेहो तथा सिख **गुरु ग्रन्थ** (प्रथम संकलन १६०५) सदृश महान ग्रन्थमे पबैत छी। जयदेवक कृतिमे पदक ऊपर जे रागक नाम देल गेल अछि से एहि प्रकारेँ अछि: मालव, गुर्जरी, वसन्त, राम-किरी, कर्णाट, देशाग, देश-वराड़ी, गोण्ड-किरी, भैरवी, वराड़ी, विभास; आ' ताल सभक यथा रूपक, निस्सार, यति, एकताली तथा अष्ट-ताली। एकरा ध्यानमे रखैत जे पदक संख्या चौबीसटा मात्र अछि, ई सर्वथा प्रत्याशित जे गीतगोविन्दमे राग-रागिनी सभक व्याप्ति, सिख 'वेद' **आदि ग्रन्थ** वा **गुरु ग्रन्थक** अति प्रशस्त विविधताक—जे १५म शताब्दीसँ लऽ कऽ १८म शताब्दी धरिक भक्तिपरक भजन ओ सूक्तिक विशाल संकलन थिक—अपेक्षा स्वल्प अछि। पदकेँ श्रेण्य रागमे गैबाक परिपाटी बंगालमे बड़ु चण्डीदासक महान मध्य-बंगला काव्य **श्रीकृष्णकीर्त्तनक** समय धरि ठीकसँ चलैत रहल।

एकर कल्पना कैल जा सकैत अछि जे जयदेवक पद मूलतः एहि राग ओ तालमे गाओल जाइत छल। मुदा चैतन्यक अभ्युदयक अनन्तर, खास कऽ वैष्णव आचार्य ओ भक्त तथा कीर्त्तन गायकक विशाल मेला वा सम्मेलन जे १५९४ ई० मे राजशाही जिलान्तर्गत खेतुरामे भेल, जाहिमे वैष्णव भक्ति-परक संगीतकेँ सुव्यवस्थित कैल गेल, तकर बाद, बंगालमे प्राचीन परिपाटीक क्रमशः अवसान भऽ गेल। आब बंगालमे गायनक विभिन्न शैलीयुक्त नव परिपाटीक विकास भेल अछि (यथा मनोहरशाही, गोरानहाटी एवं राणीहाटी वा रेणती), आ' जयदेवक पद बंगाली किर्तनिया वा पदगायक द्वारा एही नव परिपाटीमे गाओल जाइत अछि।

जयदेवक पदक प्रसार सम्पूर्ण भारतमे भेल आ' सहजहि सर्वत्र स्थानीय रूपान्तर ओ स्थानीय पद्धतिक विकास भेल। हम बंगालक किछु श्रेष्ठ कला-कारसँ जयदेवक पदक गायन सुनने छी; उड़ीसामे (पुरीमे जतय मन्दिरक देवदासी अखनहु उड़िया शैलीमे पदकेँ गबैत छथि) सुनने छी आ मणिपुर (इम्फाल) मे सेहो सुनने छी जे हिन्दूधर्मक सुदूरपूर्वक सीमा-निवेश थिक;

वृन्दावनमे सुनने छी (जे वैष्णवधर्मक वगाली एवं अन्य सम्प्रदायक महान केन्द्र थिक; महाराष्ट्रमे पूनामे सुनने छी (जे भारतीय श्रेण्य संगीतक महत्व-पूर्ण केन्द्र थिक) आ' तमिलनाडुमे तंजोरमे (एकगोट तमिल महिलाक मुहेँ, जे जयदेवक संस्कृत पदकेँ कर्णाटक वा श्रेण्य दक्षिण भारतीय परिपाटीमे गौलन्हि) सुनने छी। सभठाम आव ई असमान अछि, केवल मणिपुरकेँ छोड़ि, जतय आधुनिक वंगला परिपाटीक अनुसरण कैल जा रहल अछि।

जयदेवक पदक गान करबाक लेल वंगालमे आद्य वा प्राचीन श्रेण्य पद्धतिक पुनरुद्धारक प्रयास कैल गेल। आ' एहि दिशामे व्रज-माधुरी-संघक दिवंगता श्रीमती अर्पणा राय द्वारा पर्याप्त कार्य कैल गेल। एहिमे हुनका ओहि किर्तनिया एवं संगीतज्ञक सहयोग भेटलन्हि जनिकामे वृन्दावनक प्राचीन परिपाटीक किछु शेष छलन्हि। तहिना प्रवीण गायक, श्रेण्य भारतीय रागक अत्युत्तम संगीतज्ञ रवीन्द्रनाथ घोष, जे हरेकृष्ण मुखर्जीक संग रहि प्राचीन परिपार्टीसँ वंगला वैष्णव पदावलीक अध्ययन कैलन्हि, एहि दिशामे पर्याप्त सफल भेलाह अछि। मुदा प्राचीन अन्त्य-वंगला पद्धति अखनहु धरि प्रचलित अछि।

एहि सभसँ सिद्ध होइत अछि जे इतिहास, परम्परा ओ भारतीय संगीतक वर्तमान पद्धतिमे जयदेवक गीतक कतेक महत्वपूर्ण स्थान अछि। वस्तुतः भारतीय संगीतमे जयदेवक बड़ पैघ योगदान रहलन्हि, तहिना ओ असंदिग्ध रूपेँ भारतीय साहित्यक निर्माता रहलाह।

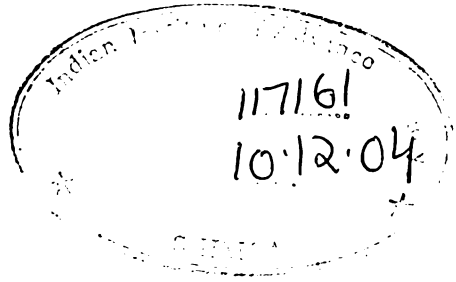
11716
10.12.04

भारतीय साहित्यक निर्माता

भारतीय साहित्यक इतिहास-यात्रामे अपन महत्वपूर्ण पदचिह्न जे केओ छोड़ि गेलाह अछि—पुरना किंवा नबका साहित्यनिर्मातालोकनि तनिका सभक परिचय देबाक लक्ष्य सोझाँ राखि एहि ग्रन्थमालाक आयोजन कएल गेल अछि।

एहि मालाक प्रत्येक पोथीमे कोनो एकेटा एहन विशिष्ट भारतीय लेखकक जीवन ओ कृतित्वक बखान कएल जाइछ जे अपन भाषाक माध्यमसँ भारतीय साहित्यक उन्नति ओ विकासमे स्थायी एवं मूल्यवान योग देने छथि।

एहि क्रममे मैथिली लेखक पर ओ मैथिली भाषामे एखन धरि जे पुस्तक प्रकाशित भेल अछि तकर विवरण नीचाँ देल जाइत अछि :—

मूलतः अङरेजीमे :—

विद्यापति	:	रमानाथ झा
चन्दा झा	:	जयदेव मिश्र

मूलतः मैथिलीमे :—

सीताराम झा	:	भीमनाथ झा

मैथिलीमे अनूदित :—

नामदेव	:	माधव गोपाल देशमुख
चण्डीदास	:	सुकुमार सेन
ईश्वरचन्द्र विद्यासागर	:	हिरण्मय बनर्जी
काजी नजरुल इस्लाम	:	गोपाल हालदार